RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 61 अंक : 06 प्रकाशन तिथि : 25 मई कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 जून 2024

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

महाराणा सा सपूत पाकर
धन्य हुई यह वसुंधरा।।

IAS / RAS

तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

स्प्रिंग बोर्ड

Spring Board

Springboard Academy,
Main Riddi Siddi Choraha,
Opposite Bank of Baroda,
Gopalpura, Bypass Jaipur

Website : www.springboardindia.org

संघशक्ति

4 जून, 2024

वर्ष : 61 अंक : 06

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय-सूची

समाचार संक्षेप		04
चलता रहे मेरा संघ	श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर	06
पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)	श्री चैन सिंह बैठवास	07
मेवाड़ का सूर्य पुत्र	श्री अरविन्द सिंह मेवाड़	09
राजपूत तुम्हारे लिए लड़ा	श्री युधिष्ठिर	11
शूर भक्त सुधन्वा	श्री सुदर्शन सिंह चक्र	13
तुलसी का भक्ति-मार्ग	आचार्य श्री रामचन्द्र शुक्ल	20
बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास	श्री खींवसिंह सुलताना	23
महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	श्री भंवरसिंह मांडासी	26
आदर्श और अनूठे गाँव	कर्नल श्री हिम्मत सिंह	29
अपनी बात		33

समाचार संक्षेप

सहयोगियों का स्नेह मिलन :

पू. तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन 28 जनवरी को दिल्ली में हुआ, उस समारोह की तैयारियों में जयपुर में जो सहयोगी रहे, उनका स्नेह-मिलन 31 मार्च को संघशक्ति प्रांगण में सम्पन्न हुआ। दिल्ली में सम्पन्न समारोह और संघ की बात प्रारम्भ हुई पर एक सहयोगी द्वारा होने वाले लोकसभा चुनाव के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा गया कि क्या किया जाना चाहिये। राजनीति की चर्चा चल पड़ी तो बताया गया कि हम किसी राजनैतिक दल के सदस्य नहीं हैं। हम तो मतदाता हैं और मतदाता को अपना हित देखकर ही निर्णय लेना चाहिए। इस दृष्टिकोण से हमारा उम्मीदवार हो तो उसे ही मत देना चाहिए ताकि उस तक हमारी पहुँच बनी रहे। जहाँ हमारे समाज का उम्मीदवार नहीं है, वहाँ जो उम्मीदवार हमारे समाज के साथ अच्छा व्यवहार रखता है, मिलकर चलता है, उसे ही मत देना चाहिए। राजनैतिक दलों की ओर से तो हमारे समाज की ओर से दिए गये सहयोग की कीमत दिखाई नहीं देती, उपेक्षा ही नजर आई है।

कार्यक्रम में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी का सान्निध्य भी मिला। आपने कहा कि आज का कार्यक्रम सहयोगियों से मिलने और स्नेह-भोज के लिए था, परन्तु सामयिक विषय होने से राजनीति भी चर्चित हो गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ युवकों व युवतियों में संस्कार डालने का कार्य करता है कि समाज, संस्कृति और धर्म के अनुकूल हमारा क्या कर्तव्य होना चाहिए। इसी पर विस्तार से बात चलाते रहना चाहिए। आप संघ से बहुत अपेक्षाएँ रखते हैं, पर क्या आप अपने बच्चों को संघ में जोड़ने का प्रयास करते हैं? वे नहीं जुड़े हैं तो यह कमी तो माता-पिता की है। शास्त्रों, ऋषि-मुनियों के कथनानुसार जीवन का उद्देश्य ईश्वर को प्राप्त करना है। क्षत्रिय युवक संघ का काम भी उसी प्राप्ति के लिए किया गया भजन है। समाज के साथ संघ का तालमेल बिठाना है। संघ चाहता है देश का हित हो, समाज का कल्याण हो और पूरी मानवता हमारा कार्यक्षेत्र बन जाए। यह कार्य आसान नहीं है, समय लगेगा, लेकिन इसी कार्य हेतु त्याग की परम्परा बनी रहे, यह आवश्यक है।

7 अप्रेल को सूरत स्थित देवभूमि फार्म पर भी सूरत के सहयोगियों एवं स्वयंसेवकों का स्नेह-मिलन सम्पन्न हुआ। मातृशक्ति भी उपस्थित रही, स्नेहभोज का कार्यक्रम रहा।

शिविर :

27-28 अप्रेल को जयपुर के स्वयंसेवकों ने मथुरा-वृंदावन का एक भ्रमण शिविर किया। संघप्रमुख श्री का शिविर में सान्निध्य रहा तथा कुल 42 स्वयंसेवक इस शिविर में रहे। अनेक मंदिरों के दर्शनों का लाभ लिया तथा स्वयंसेवक के लिए जीवन व्यवहार को संघ के अनुकूल बनाए रखने हेतु दिए गये अष्ट सूत्री कार्यक्रम को संघप्रमुख श्री ने विस्तार से समझाया। संघ कार्य गति पकड़े इसके लिये पूज्य तनसिंहजी के जीवन को अपनाना आवश्यक है।

12 से 14 तक एक प्राथमिक शिविर टिकमापुर (उत्तरप्रदेश) में भी सम्पन्न हुआ।

प्रतिमा अनावरण :

अहमदशाह जैसे मदांध शासक को भी नाकों चने चबवा देने वाले सामंतसिंह बिहोला की प्रतिमा का अनावरण 17 अप्रेल को गांधीनगर के निकटवर्ती पालज गाँव में सम्पन्न, हुआ। इस अवसर पर संघ प्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह ने क्षत्रिय के गीता में बताए गए सातों गुणों को विस्तार से समझाया और क्षात्रधर्म पालन हेतु उन्हें आवश्यक बताया। क्षत्रिय तो वह हैं जो 'परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम' का कार्य करता है। सज्जनों की रक्षा और दुष्टों का संहार जो क्षत्रिय का कर्तव्य है, वह बिना शक्ति के सम्भव

नहीं अतः हमें क्षत्रिय के गुण जीवन व्यवहार में लाकर, संगठित होकर शक्ति सम्पन्न बनना है। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शंकरसिंह बाघेला ने अपने सम्बोधन में कहा कि सामंतसिंह जैसे महापुरुषों से प्रेरणा लेकर अपने कर्तव्य का पालन करने हेतु चलना है। वर्तमान में समाज के सामने जो अनेक चुनौतियाँ हैं, उनका सामना हमें संगठित होकर करना है। संगठन की शक्ति वालों की कोई उपेक्षा नहीं कर सकता। बिहोला राजपूत समाज मूल रूप से वाघेला सोलंकी समाज से निकला हुआ है।

अस्मिता महा सम्मेलन :

14 अप्रेल को राजकोट जिले के रतनपर गाँव में क्षत्रिय समाज का महा सम्मेलन आयोजित हुआ। गुजरात में राजकोट लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी पुरुषोत्तम रूपाला की ओर से क्षत्रिय समाज के प्रति की गई टिप्पणी के विरोध में यह आयोजन हुआ।। पूरा गुजरात का क्षत्रिय समाज इस टिप्पणी के विरुद्ध आन्दोलनरत था और इस महासम्मेलन में वह शक्ति प्रदर्शित हुई। माँग बड़ी छोटी-सी थी कि इस व्यक्ति को टिकट लोकसभा हेतु न दी जाए। पर भाजपा ने इस भयंकरविरोध की भी उपेक्षा की। इस महा सम्मेलन के बाद अलग-अलग क्षेत्रों में भी ऐसे ही प्रदर्शन हुए। समाज का मानस भाजपा के विरोध पर दृढ होता जा रहा है।

पश्चिमी उत्तरप्रदेश में भी समाज की उपेक्षा से पीड़ित समाज ने 7 अप्रेल को नानोता (सहारनपुर) में तथा 16 अप्रेल को खेड़ा (मुजफ्फरनगर) में विशाल सम्मेलन कर चुनावों में उत्तर देने का निश्चय किया। जम्मू में भी सभा के माध्यम से आक्रोश 22 अप्रेल को जताया।

अन्य समाचार :

- 30-31 मार्च को सिरोही जिले के सरण का खेड़ा गाँव में जालोर संभाग का संभागीय स्नेह-मिलन सम्पन्न हुआ।
- 31 मार्च को जगन्नाथपुरा (पाटन) में स्नेह-मिलन 52 गोल राजपूत समाज के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।
- 31 मार्च को सूरत प्रान्त की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। इसमें 6 माह के कार्यों की समीक्षा की गई।
- जोधपुर संभाग की संभागीय बैठक 7 अप्रेल को तनायन कार्यालय में सम्पन्न हुई। होने वाले बालकों व बालिकाओं के शिविरों के लिए तैयार करने तथा प्रांतीय बैठकों हेतु भी चर्चा हुई।
- 14 अप्रेल को संघशक्ति प्रांगण जयपुर में मातृशक्ति की बैठक का आयोजन हुआ। नारी शक्ति, अर्थात् नारी स्वयं अपने आप में शक्ति है। उस शक्ति को काम में लेने हेतु सजगता बनाए रखनी होगी। किसी गलत बात पर आक्रोश आता होगा लेकिन उस आक्रोश को एक शक्ति के रूप में लाकर उसका सदुपयोग करना चाहिये।
- जोधपुर के डीगड़ी में 18 अप्रेल को स्नेह-मिलन आयोजित हुआ। जोधपुर शहर के स्वयंसेवक व सहयोगी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
- नागोला (भिनाय) में क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की दो दिवसीय कार्यशाला 27 व 28 अप्रेल को सम्पन्न हुई। क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की द्वितीय कार्यशाला पांचेटा (पाली) में 4 व 5 मई को सम्पन्न हुई।
- 28 अप्रेल को उदयपुर जिले के लुणदा कानोड़ में स्नेह-मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ।
- 28 अप्रेल को जयपुर संभाग का मासिक स्नेह-मिलन कार्यक्रम राजावास में सम्पन्न हुआ।
- 28 अप्रेल को मध्य गुजरात सम्भाग के अरवल्ली प्रान्त में सम्पर्क यात्रा रखी गई। वाडथली, गैड, ऊँचा, धंबोलिया गाँवों में श्री क्षत्रिय युवक संघ की जानकारी दी गई।

इतिहस सो गये, किन्तु उनकी बलिवेदी अब भी भूख के कारण जाग रही है। - पू. तनसिंह जी

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर 2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर द्वारा 27-5-2023 को प्रदत प्रभात संदेश)

केसरिया ध्वज के समक्ष खड़े होकर हम केसरिया ध्वज से ही प्रार्थना कर रहे हैं। केसरिया ध्वज हमारे उद्देश्य का प्रतीक है और हमारा उद्देश्य है क्षात्रधर्म का पालन करना। क्षात्रधर्म कोई नया उद्देश्य नहीं है, यह तो आदिकाल से चलता आ रहा है। सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा को मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस मारना चाहते थे। नारायण ने उन राक्षसों से ब्रह्मा जी की रक्षा की और यहीं से क्षात्रधर्म प्रारम्भ हो गया।

मार्कण्डेय पुराण में, दुर्गा सप्तशती में भी इसी प्रकार का वर्णन आता है। हमारे शास्त्रों में वेदों में क्षात्रधर्म का वर्णन है। उसी क्षात्रधर्म का पालन करने का हम यहाँ प्रशिक्षण ले रहे हैं। क्योंकि हमारे क्षात्रधर्म पालन में कुछ व्यवधान आ गया। काल का व्यवधान आ गया, युग का व्यवधान आ गया। युग के बदलाव के साथ सभी ने अपने धर्म को भुला दिया और हमने भी हमारे धर्म पालन को भुला दिया। आज खड़े होकर वर्णन करते हैं कि धर्म पालन में हमारे पूर्वजों ने यह किया, ऐसा किया। लेकिन अब तो सदियों से हम दास बने हुए हैं। कैसे बन गए दास? राजा से रंक कैसे हो गए हम? इस क्षात्रधर्म के पालन को भुलाने के कारण हम दास बन गये। इसलिए क्षात्रधर्म पावन की पुनरावर्ति करने के लिये हम यहाँ अनुकूल संस्कार निर्माण का अभ्यास कर रहे हैं।

महाभारत के शान्ति पर्व में कहा है- ब्राह्मण क्षत्रियके आश्रित रहकर अपनी जीविका का उपार्जन करता है। क्षत्रिय ब्राह्मण के आश्रित नहीं रहता। लेकिन बहुत लम्बे समय से हमको यह पढाया जाता रहा है कि हम ब्राह्मण की शरण में जाएँ। सारा संसार क्षत्रिय की शरण में ही सुरक्षित रह सकता है। यह बात हमको सुहाती है लेकिन हमको यह सोचना होगा कि हमारा वह क्षत्रियत्व कहाँ चला गया कि हम दास हो गये। इतने पुरातन धर्म को हम कैसे भूल गए? संसार भूल सकता है पर हम कैसे भूल गये? हम तो समाज के चोकीदार हैं, राष्ट्र के चोकीदार हैं और जब चोकीदार, पहरेदार सो जाता है तो लूट-खसोट मच जाती है। तो इस संसार की सारी अराजकता का कारण हम बन गये क्योंकि क्षात्रधर्म पालन को भूल गये।

वाल्मीकि रामायण में यहाँ तक कहा गया है कि यदि कोई स्त्री भी आततायी बन जाती है तो उसका भी वध कर दिया जाना चाहिए क्षत्रिय द्वारा क्योंकि ऐसा करके वह अपने धर्म या पालन करता है। रामायण में हमने पढ़ा, सुना कि शुर्पणखा का नाक काटा गया। नाक क्यों काटा गया, वध क्यों नहीं किया गया? उसको ऐसी स्थिति में भेजा गया ताकि राक्षस भड़कें, और आक्रमण करें। चौदह हजार राक्षस भेजे गये जिनको श्री राम ने मार डाला। क्षात्रधर्म का पालन किया।

वे क्षमताएँ प्राप्त करना हमारी मंजिल है। उस मंजिल पर पहुँचने से पहले ना रुकेंगे ना झुकेंगे। ऐसा संकल्प, ऐसी प्रतिज्ञा जिनकी है, वे ही क्षात्रधर्म का पालन कर सकते हैं। ऐसा व्यक्ति ही क्षत्रिय कहलाने के योग्य है और वह समस्त मानव जाति का कल्याण करने में लगा रह सकता है। हम अपने इस महत्त्व को समझें। बार-बार श्री क्षत्रिय युवक संघ हमको चेताता है, जागृत करता है। प्रात:काल से लेकर सायंकाल तक चलने वाले कार्यक्रमों में अन्य कोई शिक्षा नहीं है। कार्यक्रम और विषय बदलते रहते हैं लेकिन सभी हैं हमारी मंजिल क्षात्रधर्म की ओर बढ़ते हुए कदम। यह सदैव हम स्मरण रखें, मंजिल की ओर ही बढ़ते रहें और भगवान से भी इसके लिए ही प्रार्थना करें। आज के मंगल प्रभात में श्री क्षत्रिय युवक संघ का हमारे लिए यही मंगल संदेश है।

पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

हम नहीं जानते ईश्वर क्या चाहता है? पर पूज्य श्री तनसिंह जी जानते थे कि ईश्वर क्या चाहता है, ईश्वर की क्या चाह है? ईश्वर की चाह को पूर्ण करने के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने एक संगठित शक्ति की आवश्यकता महसूस की, तो उनके दिमाग में एक आदर्श संगठन खड़ा करने की बात उपजी। आदर्श संगठन तो वह है जिसमें निम्न बातों का समावेश हो –

एक ध्येय, एक मार्ग, एक भाव, एक विचार।
एक ध्वज, एक नेता, एक प्रतिज्ञा, एक प्रणेता।।
एक राग, एक रंग, एक साथ, एक संग।।

यह मूल मंत्र एक आदर्श संगठन का है और श्री क्षत्रिय युवक संघ दिसम्बर, सन् 1946 से इसी दिशा में, इसी मार्ग पर अग्रसर है।

पूज्य श्री तनसिंह जी कहा करते थे कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है और इस ईश्वरीय कार्य को हम एक संगठित शक्ति के रूप में मिलकर करें, यह उनकी प्रबल इच्छा थी, इसलिए उन्होंने एक आदर्श संगठन की सारी बातों का समावेश श्री क्षत्रिय युवक संघ में कर अनेक लोगों को संघ कार्य में नियोजित किया और बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ एक साधना मार्ग है, एक उपासना पद्धति है, ईश्वर तक जाने का मार्ग है।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया- ''हमारी साधना का मूल तत्त्व है अहंकार की अनासक्ति। बड़े प्रयत्नों के बाद हम केवल यह जान पाये थे कि संगठन के लिए आवश्यक है कि सभी मिलकर एक को प्रतिष्ठा प्रदान करें और केवल इसी से प्रतिष्ठित बनें। साधारण मार्ग तो है अपने आपको प्रतिष्ठित करना। सारा संसार इसी चेष्टा में अन्धा हुआ बढ़ता जा रहा है। वह अन्य सभी को अप्रतिष्ठित कर स्वयं प्रतिष्ठित होने के लोभ को नहीं छोड़ सकता, क्योंकि प्रतिष्ठा का इससे अधिक सरल मार्ग कोई नहीं दिखाई देता। असल में यह मार्ग ही नहीं है। इससे किसी को प्रतिष्ठा मिलती भी नहीं, केवल एक भ्रान्ति मिलती है।''

अपने भीतर पनपे अहंकार के कारण व्यक्ति अपने को अधिक महत्त्व देने लग जाता है। अहम् की भावना ही व्यक्तिवाद को जन्म देती है। व्यक्तिवाद की भावना संगठन में दीमक का काम करती है। इससे अनुशासनहीनता बढती है और आसुरी प्रवृति पनपती है। आसुरी प्रवृति वालों के दिल और दिमाग में अपने को पूजाने की सहज इच्छा बनी रहती है।

भ्रमों में जो भूले हैं ज्योति दिखानी,
आत्म बल की खोई शक्ति जुटानी।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया- ''हमने अहंकार का विश्लेषण किया, साधक को स्थान-स्थान पर सचेत किया है, लेकिन उसकी गहरी लिप्सा तोड़ी नहीं जा पाई। यह कठिन साधना हमने सामान्य साधकों के लिए भी सरल सहज मान ली। नतीजा यह निकला कि लोग मुझे इसलिए अप्रतिष्ठित करने पर तुले कि इससे वे प्रतिष्ठित हो जायें। जब उन्हें प्रतिष्ठा न मिले तो तिलमिला कर प्रतिष्ठित को ही अप्रतिष्ठित करने से नहीं हिचकिचाते। कैसी विचित्र विडम्बना है जिसने साधक को सर्वधा नग्न करके रख दिया। हमारे कार्य का सारा महल ताश के पत्तों की भाँति बिखर गया।''

जहाँ कहीं भी व्यक्तिवाद पनपा है- चाहे वह राष्ट्र है, समाज अथवा संस्था है, वहाँ बंटाढार ही हुआ है। उनका पतन निश्चित है। व्यक्तिवाद ने सदैव अहं भाव को

हवा दी है और अहं भाव ने तो सदैव फूट के बीज ही बोये हैं। इस मर्ज के लोगों के सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने जो कहा, उन्हीं की जुबानी –

''प्रश्न जीर्णोद्धार का नहीं है। वापिस इसी काम को शुरू करने के यही परिणाम निकल सकते हैं। इसलिए असली प्रश्न तो है कि मनुष्य की प्रतिष्ठा की लिप्सा को कैसे तोड़ा जाये। बड़ा कठिन काम है। कुछ साधक तो प्रकट हो गए, उन्हें तो समझ लिया गया और उन्होंने भी मान लिया कि वे समझ लिए गए हैं, लेकिन आज भी अनेक ऐसे समर्थक हैं जो रोगी तो उसी रोग के हैं लेकिन उनके सौभाग्य से या दुर्भाग्य से उस रोग के लक्षण प्रकट नहीं हुए। ऐसे अनेक छद्मवेशी आवारा साधकों के वेश में हैं। वे विद्रोही नहीं बन पाये क्योंकि उन्होंने या तो अवसर खो दिया अथवा वे समर्थन के लिए विवश थे। असल में स्वयं अप्रतिष्ठित रहकर मुझे प्रतिष्ठित करने वाले तो कितने होंगे? ऐसों की गिनती उंगलियों पर हो सकती है।''

''जिस किसी को चर्चा, बौद्धिक का काम दिया गया है, वे लगभग सभी इस मर्ज के शिकार हुए हैं। कुछ के मर्ज प्रकट हो गए और शेष मर्ज के लक्षणों के प्रकट होने की प्रतीक्षा में साधक के श्रेय को छीने बैठे हैं। जब कभी मैं ऐसे घटिया दर्जे के लोगों के घटिया अभिमानों पर विचार करता हूँ तो लगता है कि लोग कितने गिर गए हैं।

''अपने आपको प्रतिष्ठित सिद्ध करने के उतावले लोगों ने इसे भानुमति का कुनबा बना डाला है। उम्र और आकार को देखकर साधना की प्रगति का लेखा-जोखा करने वाले तो बहुत हैं। विकास के गुणों को गौण मान लिया गया और हर पीछे रहने वाले के लिए आगे बढने वाले चिन्तित रहने लगे।

''विद्वता का आदर करना और उसी विद्वान का अनादर करना, परस्पर विरोधी विचार तो हैं ही, मानसिक विकृति का भी द्योतक हैं। जहाँ विद्वानों का अनादर होगा, वहाँ मूर्खों की तूती बोलेगी। मूर्ख विरोध से नहीं मरते, अपनी ही मौत मरते हैं। उन्हें समझ तो देनी ही चाहिए पर आग्रह की आवश्यकता नहीं। सद्बुद्धि तो केवल पुण्यात्माएँ ही ग्रहण करती हैं जो बहुत थोड़ी होती हैं। संसार की भीड़ में भले लोगों की संख्या बहुत कम होती है फिर भी वे भीड़ से सम्मान पाते हैं।''

अहंभावी व्यक्ति किसी को समझने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं करता या यह कहें कि अहंभावी व्यक्ति किसी को समझना ही नहीं चाहता। उनमें अकिंचनता और विनय का भाव ही नहीं होता। अपने भीतर पनपे अहंकार के कारण वह अपने को अधिक महत्त्व देने लग जाता है।

अहंभावी व्यक्ति अपने अहं के कारण पूज्य श्री तनसिंह जी के भीतर छिपे सत्य व सौन्दर्य को –न तो देख पाये और न समझ ही पाये। वे तो उन्हें संशय की नजर से ही देखा करते थे।

संघ दीप से जल कर हम सब दीप लड़ी बन जावें,
भाव कर्म को एक बनाकर व्यक्तिवाद बिसरावें।।
हम ऐसा संघ बनावें।।

(क्रमशः)

ज्यों जल में नाव का रहना अच्छा है,
लेकिन अच्छा नहीं नाव में जल का आना।
त्यों मन का भक्ति में लगना अच्छा है,
लेकिन अच्छा नहीं मन में वासना का अना।

– शम्भूसिंह खरेड़ा 'अल्पज्ञ'

मेवाड़ का सूर्य पुत्र

– अरविन्द सिंह मेवाड़

आस्था और समर्पण की भूमि कुंभलगढ़ में मेवाड़ के सूर्य पुत्र, महाराणा प्रताप का जन्म महोत्सव मेरे स्वयं के लिए शब्दातीत आनन्दानुभूति का विषय है। मैं इस आयोजन के प्रति अपनी कृतज्ञ मंगलेच्छा सादर संप्रेषित करता हूँ। महाराणा प्रताप का स्वाभिमान और स्वाधीनता के लिए महान संघर्ष, सृष्टि के आरम्भ से चले आ रहे सद् और असद् के मध्य महासंग्राम का प्रतीक है। तत्कालीन साम्राज्यवादी मुगलिया दम्भ पर्याय है खूनी विस्तार का। केवल मेवाड़ को छोड़कर समस्त भारत की ऊर्जा विदेशी आक्रान्ताओं के चरणों में पड़ी थी। आर्यावर्त की विक्रमी क्षत्रिय अस्मिता अपने सुविधाभोगी निर्लज्ज समर्पण पर स्वयं को आत्म धन्य कर रही थी। ठीक उसी समय मानव मूल्यों की विजयिनी इस मेवाड़ की वसुन्धरा का प्रतापी इंकलाब अंगद का चरण बनकर खड़ा था। दासता का उद्दाम अंधकार जब गहन से गहनतम हो उठा तब महाराणा प्रताप के संकल्प की बलिदानी मशाल अपने उत्सर्ग के आलोक से दासता के दम्भी और अहंकारी चेहरे को बेनकाब करने गयी। आततायी जुल्म के दमन की मदान्धता जितनी निरंकुश और क्रूर थी, प्रतापी प्रतिरोध उतना ही दृढ़ प्रतिज्ञ था।

महाराणा प्रताप ने अपने पूर्वज भगवान सूर्यवंशी राम की भाँति सिद्ध किया कि सत्य का महासमर साधन और शस्त्र से नहीं, मनुजता की उदात्त इच्छाशक्ति और आत्मबल से लड़ा जाता है।

अपनी इसी नैतिक आत्मशक्ति के बल पर ही महाराणा प्रताप भारत की चेतना और सामर्थ्य की प्रतिमूर्ति बन गये हैं। प्रताप जन-जन की आदिम स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का नाम है, जिसकी स्वाभिमानी आस्था की चट्टान टूट भले ही जाये पर झुकायी नहीं जा सकती। यह एक ऐसी अपराजेय संघर्षशीलता की दुर्धर्ष जिजीविषा है जो शताब्दियों के लिए उदाहरण बन गई है। ऐसी प्रणवीरता संसार भर के स्वतंत्रता सेनानियों में अग्रगण्य ही नहीं आराधनीय भी है। विश्वभर में जो भी उत्पीड़न के क्रूर निजाम के खिलाफ बगावत की आवज बुलन्द कर रहा है उसके प्राणों में वैसी ही प्रतापी प्रण विजयी मनीषा है। जन चेतना के कण कण में और देश भक्ति की आराध्य देवी की बलिवेदी पर प्राण समर्पण करने वाले कंठ-कंठ में आज भी प्रताप का ही स्वर प्रतिभासित होता है। भरतीय स्वतंत्रता संग्राम के पैदल सिपाही तक ने पराक्रमी प्रताप से प्रेरणा ली है। महाराणा प्रताप के स्वामीभक्त चेतक तक ने अपने प्राणोत्सर्ग से जो गौरवमंडित इतिहास रचा है उसका दूसरा उदाहरण संसार भर के इतिहास में नहीं मिलता। सत्ता, सुविधा तथा वोट पर बिकी आज की निर्लज्ज राजनीति चेतक की शहादत ही से बहुत कुछ सीख सकती है। महाराणा प्रताप का गर्वोन्नत भाल लाखों ही कट्टर धर्मान्ध शमशीरों के सम्मुख अपराजेय रहा। उसका कारण उनमें मानवता की सर्वोच्च उदारता के गुणों का विद्यमान होना ही है। प्रताप जीवन पर्यन्त मानव मूल्यों के लिये संघर्षरत रहे और मनुजता के कुलाभिमान की प्रत्येक मूल्य पर रक्षा की। शब्द सामर्थ्य की एक सीमा होती है, जबकि प्रताप की अटल और संकल्पित आस्था शब्दातीत है, और इसी आस्था से प्रेरित प्रताप ने हकीम खाँ सूरी को अग्रिम पंक्ति का सेनानायक बना, हिन्दू मुसलमान या राजपूत की अपेक्षा मुनष्य मात्र की उत्सर्गी प्राण-शक्ति पर विश्वास किया और उनके विश्वास पर उस जांबाज पठान ने प्राण रहते आँच नहीं आने दी। हल्दीघाटी के महासमर में बहादुर पठान का सर कट कर गिर जाने पर भी उसके मुर्दा हाथों से भी कौमी एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव की वह जिन्दा पठानी तलवार छुड़ायी नहीं जा सकी और उसको तलवार के साथ ही दफन किया गया। गंगा जमना की धरती की कौमी एकता और अखण्डता का ऐसा ज्वलन्त बलिदान महाप्रतापी प्रण पालक प्रताप के नेतृत्व में ही सम्भव था।

मेवाड़ के इस सूर्य-पुत्र ने अपनी प्राण शक्ति से यहाँ के कण-कण को अनुप्राणित किया। इस त्यागमय उत्सर्ग से अरावली का पत्थर-पत्थर संजीवित हो उठा। झाला मान का बलिदान देखकर महाकाल तक सिहर उठा। ग्वालियर के राजा रामशाह ने अपने पूरे परिवार की आहुति दी। दानवीर भामाशाह, डोड़िया, राठौड़, राणपुंजा, चुण्डावत और शक्तावत तथा कोठारी आदि अनेक वीर पुत्रों ने शौर्य और त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। हल्दीघाटी के महासमर में भील और मीणा आदि अनेकों वनवासी जातियों के एकलव्य का निष्ठा से किया गया शरसंधान यह देश क्या कभी भुला सकता है? महाराणा प्रताप के नेतृत्व में प्रत्येक जाति और सम्प्रदाय की संजीवित चेतना ने यथा सामर्थ्य आदरणीय और अनुकरणीय आत्मोत्सर्ग किया. यहाँ तक कि यहाँ के निहत्थे जन-जन ने बन्दूकों और तोपों का मुकाबाला ईंट पत्थरों से कर प्रताप के इस प्रतापी संघर्ष को जन युद्ध की संज्ञा से सम्मानित कर अपनी धवल कीर्ति अक्षुण्ण बना दी।

इसीलिये हल्दीघाटी की केसरिया माटी मातृभूमि पर प्राण समर्पण करने वाले सरफरोशों के माथे का चन्दन है, जिसका स्मरण मात्र देशभक्तों के प्राणों में सर्वस्व त्याग की निर्झरणी प्रवाहित करता रहेगा और स्वाधीनता की पावन अमर ज्योति को भीषण झंझावातों में भी अनवरत जलते रहने की प्रेरणा देगा। यह सत्य इतिहास से छिपा नहीं है कि चेतक सवार के भाले से निकली कालजयी अग्नि ने ही भारत के स्वतंत्रता महायज्ञ को पूर्णाहुति तक प्रज्वलित रखने की अजस्र प्रेरणा दी थी।

वीरता एवं पौरुष के महा मानवीय गुणों के अतिरिक्त महाराणा प्रताप में मनुष्यता के सभी पूजनीय भाव मूर्ति मन्त थे। उनकी सदाशयता, प्रजा वत्सलता तथा सर्वोच्च मानवीय उदारता अनुकरणीय है। हल्दीघाटी के युद्ध के समय शिकार पर गये राजा मानसिंह पर घात लगाकर धोखे से आक्रमण उन्हें इसीलिये स्वीकार नहीं हुआ। दुश्मन पर पीछे से वार करने की अपेक्षा रणभूमि में आमने-सामने लोहा आजमाना ही उनकी वीरोचित अस्मिता को स्वीकार था। कतिपय मेवाड़ी सेनिकों द्वारा मुगल बेगमों को बंदी बनाया जाना भी उनकी आत्मा की स्वीकारोक्ति से परे था। अतः अपने पुत्र अमरसिंह को शत्रु पक्ष की महिलाओं को मुगल शिविर में सकुशल पहुँचाने का आदेश दिया गया।

शत्रु शिविर में जाने से उनके प्रिय पुत्र के प्राण संकट में पड़ सकते थे। पर उस परमवीर ने पुत्र के जीवन की अपेक्षा मनुष्यता के जीवन मूल्यों की रक्षा को अधिक सम्माननीय और पावन समझा। इसीलिये दासता और सुविधा पर बिके इतिहास का स्वर चाहे कुछ भी कहे, जन जन की आस्था और श्रद्धा के आसन पर तो प्रताप ही पूजनीय रहे हैं और रहेंगे। धर्म को दृढ़ता से धारण करने वाले इस हिन्दुआ सूर्य को आगे आने वाली भारत की भावी सन्तानें सदैव ही अपनी कृतज्ञ आराधना का अर्घ्य चढ़ाती रहेंगी।

मानवकुलभूषण प्रताप का जन्मोत्सव मनाये जाने पर किस कृतघ्न भारतीय को प्रसन्नता न होगी। मेवाड़ी माटी के इस सपूत के समक्ष सम्पूर्ण राष्ट्र भक्ति भावना और श्रद्धा से नत मस्तक है। अपनी ये महिमामयी मेवाड़ भूमि अनेकों नरपुंगवों की जन्म दायिनी है। मानव धर्म इस माटी का स्वभाव है। भविष्य का वह समय और भी महिमावान और धन्य होगा जब प्रताप की भाँति यहाँ जन्मी अन्य अनेकों अमर हुतात्माओं की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु ऐसे ही महोत्सव आयोजित होंगे।

इन्हीं संकल्पों के साथ महानायक महाराणा प्रताप को मैं अपनी श्रद्धापूजा के शब्द सुमनों के साथ विराम देता हूँ।

राणा प्रताप इस भारत भूमि के मुक्तिमंत्र का गायक था,
राणा प्रताप आजादी का अपराजित काल विधायक था।
चेतक सवार में जागा था विक्रमी तेज बलिदानी का,
जय एकलिंग का ज्वार जगा जागा था खड्ग भवानी का।
आदित्य तेज के वीर बाहु जो झुकना नहीं जानते थे,
राणा प्रताप को दुश्मन भी अपना आदर्श मानते थे।

'प्रताप कलश' स्मारिका से साभार

राजपूत तुम्हारे लिए लड़ा

– युधिष्ठिर

इतिहास के कागज फड़-फड़ाए पर इतिहासकारों ने अपनी आत्मा बेच दी। जो तुम्हारे रक्षक हैं उन्हें बेड़ियाँ पहनाने का काम किया जा रहा था। तुम वही कलंकित इंसान हो जिसने कहा राजपूत तो कुर्सी के लिए लड़ता था। तुम्हें कलंकित इसलिए नहीं कहा गया क्योंकि तुमने राजपूत के बारे में ऐसा कहा। तुम ईश्वर से द्वेष करने वाले इंसान हो। मुसलमान भी उसी ईश्वर की संतान है फिर तुम्हें उनसे नफरत क्यों। राजपूत तो कुर्सी के लिए लड़े इन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा। तुम्हारे बाप-दादा यही तो बनने वाले थे। तुम भी आज यही होते। राजपूत कुर्सी के लिए लड़ा। कोई मंदिर तोड़ने के लिए आ रहा हो, कोई किसी की बहन-बेटी को उठाकर ले गया, कोई गायें चुराकर ले जा रहा हो, कोई जबरन धर्म परिवर्तन करवा रहा हो, क्या यहाँ भी राजपूत कुर्सी के लिए लड़ा? तुम ऐसा मत सोचना मैं तुम्हें सफाई दे रहा हूँ। मैं तुम्हें सफाई कैसे दे सकता हूँ। तुमने अपना पुरुषत्व खो दिया। तुम्हारी रगों में काला खून दौड़ रहा है जो ईर्ष्या की आग में जम गया है। अफगानिस्तान भी आर्यावृत का हिस्सा था। गाँधारी वहीं की थी। जितने मुस्लिम देश आज दिखाई दे रहे हैं वे सारे मुस्लिम देश थे ही नहीं। दुनिया में सबसे ज्यादा देश हैं तो वो मुस्लिम देश हैं और सबसे ज्यादा हिन्दू अगर कहीं हैं तो वो भारत में हैं। यहाँ राजपूत लड़े थे इसलिए हिन्दू यहाँ ज्यादा हैं। बाहर कोई लड़ने वाला नहीं था इसलिए वो देश मुस्लिम बनते गये। अगर भारत से बाहर कहीं हिंदू आपको मिले तो वो भारत से ही गए हुए हैं।

महाराजा कर्णसिंह का जन्म 10 जुलाई, 1616 को बीकानेर में हुआ था। महाराजा सूरसिंह के देहावसान के पश्चात 13 अक्टूबर, 1631 को कर्णसिंह बीकानेर के महाराजा बने। राज्याभिषेक के बाद जब कर्णसिंह शाहजहाँ के दरबार में गए तो दो हजार जात व डेढ़ हजार सवार का मनसब इन्हें दिया गया। महाराजा कर्णसिंह अहमदनगर की चढ़ाई, परेंडे की चढ़ाई, विक्रमाजीत व शाहजी पर सेना भेजने की कार्यवाही, जवारी पर चढ़ाई, मालगुजारी वसूलने की कार्यवाही करना, इन सबमें शामिल थे।

शाहजहाँ की मृत्यु के पश्चात् औरंगजेब शासनारूढ़ हो चुका था। उसने मंदिर और देवालय तोड़ने का हुक्म जारी कर दिया था। हिन्दू शासकों को राज्य प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित किया जा रहा था। इसी अवधि में चौहान (निर्वाण) शासकों ने धर्म परिवर्तन किया भी।

इसी बीच औरंगजेब ने इराक विजय करने का बहाना बनाया और सभी राजाओं को सेना सहित अपने साथ चलने के लिए कहा। कर्णसिंहजी उसकी कूटनीति और धर्मान्धता के बारे में जानते थे इसलिए उन्होंने अपने विश्वासपात्र मुसलमान सैयद जीवणशाह को उसकी मंशा पता लगाने के लिए कहा। सैयद जीवणशाह साहवा का निवासी था। उसने महाराज से अशर्फियाँ ली और जगह-जगह जमीन में गड़वा दी। और भविष्यवाणी करता कि अगर मेरी बात सच साबित होती है तो वहाँ पर अशर्फियाँ मिलेगी। यह बात फैलते-फैलते औरंगजेब तक फैल गई। उसने जीवणशाह को बुलाया। उसने मना कर दिया, कहा मुझे बादशाहों से क्या काम। इस पर औरंगजेब स्वयं आने के लिए तैयार हो गया। समय व स्थान तय कर लिया। योजना के तहत कर्णसिंह जीवणशाह के तम्बू के पीछे छिपकर बैठ गये। थोड़ी देर में औरंगजेब भी आ गया।

सैयद ने पहला प्रश्न किया-

''खुदा की बन्दगी करते हो?''

''अवश्य करता हूँ''।

''कैसे करते हो?''

''इन सब राजाओं को नदी पार जाते ही अलग-अलग डेरों में ठहरा कर इस्लाम कबूल करवा लूंगा।''

कर्णसिंह ने सभी राजाओं को आगाह कर दिया।

''लेकिन आपको इस पर संदेह कैसे हुआ?''

''अस्तअली खां ने जीवणशाह को बताया कि-कोई इराक फतह का कार्यक्रम नहीं है। यह तो सभी राजाओं को इस्लाम कबूल करवाना चाहता है जिसके बाद भारत की सारी आवाम मुसलमान हो जायेगी।''

''आप ही कोई युक्ति निकालिए।'' फिर

''नदी पार पहले हम जायेंगे क्योंकि हम मुसलमानों से हर बात में आगे रहे हैं।'' -कर्णसिंह ने कहा।

''ऐसा नहीं हो सकता, पहले हम मुसलमान नदी पार जायेंगे। हिन्दू राजा व उनकी सेना हमारे पीछे रहेगी।''

सब कर्णसिंह की योजना के अनुसार हो रहा था और सारे मुसलमान पहले नदी पार चले गये। इसी बीच एक खबर मिली और योजना को सफल करने का अवसर मिल गया।

जयपुर की राजमाता का निधन हो गया। सभी राजा शोक प्रकट करने के लिए बारह दिन अटक के इस पार की बैठे रहे। औरंगजेब और मुस्लिम सेना नदी के उस पार जा चुके थे। बारहवें की रस्म अदा करते ही नावें किनारे आकर खड़ी हो गयी। सभी मल्लाहों को मौत के घाट उतार दिया। नावों पर सबसे पहला कुल्हाड़ा कर्णसिंह ने चलाया। कुछ नावों को काट-काट कर नष्ट कर दिया तो कुछ को जला दिया। मिट्टी का बड़ा हिस्सा एकत्रित कर बैठक बनाया गया। महाराज कर्णसिंह को उस पर बैठाया गया। सभी ने एक स्वर से 'जय जंगलधर बादशाह' के नाम के जयकारे लगाये। इस योजना में मदद के लिये सैयद जीवणशाह को बीकानेर स्टेट में सालाना एक टका हर घर से वसूलने का अधिकार दिया।

अटक की घटना के बाद औरंगजेब ने कर्णसिंह को दिल्ली दरबार में उपस्थित होने के लिए कहा। विश्वासपात्रों ने राय दी कि आपका वहाँ जाना ठीक नहीं है। कर्णसिंह अपने पुत्र केशरीसिंह व पदमसिंह के साथ दिल्ली पहुँचे। दोनों के साथ होने पर किसी की भी हिम्मत नहीं हुई वार करने की। इसके बाद कर्णसिंह को औरंगाबाद भेज दिया गया। वहाँ उन्होंने कर्णपुरा बसाया। वहाँ दिलेर खाँ को किसी बहाने कर्णसिंह को मारने का आदेश भिजवाया गया। भावसिंह हाड़ा की मदद से कर्णसिंह सदैव सजग व सचेत रहे।

राजपूत कुर्सी के लिए नहीं धर्म की रक्षा के लिए लड़ा। मानवमात्र के लिए लड़ा। पशु-पक्षियों के लिए लड़ा। जात और धर्म से ऊपर उठकर लड़ा। राजपूत तो तुम्हारे लिए लड़ा। ●

- **यह कर्तव्य की आग है, जो नित्य जला करती है, और इसी में जला करती है जुल्मों की कहानियाँ; इसी में आतताइयों के इतिहास जला करते हैं और इसी में जलते हैं-स्वातंत्र्य प्रेमी प्रणवीरों के प्राण।**
- **जीवट की जिन्दगी कभी भीतर नहीं रहा करती। पुरुषार्थ की नदियाँ बाहर मैदानों में बहा करती है। भीतर प्रतीक्षा होती है मौत की, जो भीतर बैठे रहे, मरते गये और बाहर जीवन से संग्राम होता है।**
- **मेरे जाज्वल्यमान इतिहास में अब भी शोले दहक रहे हैं।**

- पू. तनसिंह जी

शूर भक्त सुधन्वा

– सुदर्शन सिंह चक्र

धर्मराज युधिष्ठिर के तीसरे अश्वमेघ यज्ञ का अश्व छूटा था। अश्वरक्षा का दायित्व पहली दो बार के समान अर्जुन पर ही था। इस बार उसके साथ प्रद्युम्न, कृत वर्मा, सात्यकि जैसे प्रधान वृष्णिवशी महारथी भी थे।

अश्वमेघ यज्ञ का अश्व सभी राज्यों में जाय, यह आवश्यक नहीं है। उस मंत्रपूत अश्व को कोई कहीं हाँककर तो ले नहीं जाता। वह स्वेच्छा पूर्वक चलता है और रक्षक-समूह इसका अनुगमन करता है। एक वर्ष में अश्व का लौट आना आवश्यक माना जाता है। जो नरेश अश्व को रोकने में समर्थ है, प्राय: अश्व वहीं जाता है। मार्ग के राज्य तो मार्ग में सहज ही आते हैं।

राजसूय यज्ञ में दिग्विजय करना आवश्यक होता है, किन्तु बहुत छोटे राज्य उस समय छोड़ दिये जाते हैं, क्योंकि किसी को अपमानित करना अथवा कहीं व्यर्थ संहार करना किसी धर्मात्मा को प्रिय नहीं होता। जो बहुत छोटे राज्य हैं, उनके शासक मानधनी हुए, अपने सम्मान की रक्षा के लिए ही युद्ध करने पर उतर आये तो व्यर्थ हत्या के अतिरिक्त क्या हाथ लगेगा। अत: जो बहुत प्रख्यात वीर हैं, दिग्विजय के समय उनका कर दे देना ही आवश्यक माना जाता है। छोटों की उपेक्षा को दोष नहीं माना जाता है।

चम्पकपुर (चम्पा) छोटा-सा पर्वतीय राज्य था। समृद्ध था और वहाँ के शासक बहुत शान्तिप्रिय थे। वहाँ के राजा हंसध्वज की कोई कामना राज्य-विस्तार की नहीं थी। अपनी प्रजा प्रसन्न है, सुखी संतुष्ट है और धार्मिक है यह उनके लिए पर्याप्त था।

इस छोटे पर्वतों के द्वार सुरक्षित राज्य की ओर आँख उठाने का लोभ किसी को नहीं हुआ। मगधराज जरासंध जैसा दुर्दम एक असहिष्णु भी इधर नहीं आया तो दूसरा कोई क्यों आता। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के लिये उनके भाईयों ने जो दिग्विजय यात्रा की, उसमें इस राज्य की उन्होंने उपेक्षा कर दी थी। दुर्गम वन तथा पर्वतों में बसे छोटे-छोटे राज्यों को विजय करने में व्यर्थ श्रम, सैनिक तथा समय कौन लगाता। इससे कोई लाभ नहीं था। बहुत कठिन यात्रा करके सफल हो जाने पर भी कोई बड़ा सुयश मिलने की सम्भावना नहीं थी।

इस राज्य में महाराजा उग्रसेन के राजसूय यज्ञ की दिग्विजय यात्रा में प्रद्युम्न नहीं आये थे और न उनके अश्वमेघ के समय अश्व के पीछे अनिरुद्ध ही पहुँचे थे। महाराज युधिष्ठिर के भी दो अश्वमेघ यज्ञ हो चुके थे किन्तु उनका अश्व यहाँ नहीं आया था।

चम्पकपुरी नरेश राजा हंसध्वज परम धार्मिक थे। भगवत भक्त थे और उनके मन में श्रीकृष्ण दर्शन की उत्कट अभिलाषा थी, किन्तु उनका निश्चय था ''राजा जब संपूर्ण प्रजा से कर लेता है, सब के पाप पुण्य में भाग पाता है तो उसको अकेले अपने कल्याण की चिन्ता क्यों करनी चाहिए। समस्त प्रजा को जो प्राप्त नहीं हो सकता, उसके पाने की इच्छा मैं कैसे कर सकता हूँ। भक्तवत्सल, अनन्त करुणा वरुणालय प्रभु जब पृथ्वी पर पधारे हैं परमधाम से, तो यदि इस अपने अत्यन्त उपेक्षणीय क्षुद्र दास पर दया करना चाहेंगे तो यहीं आवेंगे। प्रजा के साथ ही मैं उनके भुवन-पावन पदों के दर्शन करूँगा।

''राजा कालस्य कारणम्'' शासक यदि सद्धर्म का पालक है तो प्रजा स्वयं धर्माचरण में लगेगी। जो नरेश प्रजा के बिना अपने आराध्य श्री हरि का भी दर्शन नहीं करना चाहते, उनकी इच्छा के पीछे प्रजा का बच्चा-बच्चा प्राण देने को सदा समुत्सुक रहेगा ही। फलत: पूरे राज्य में सब अबला-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सदाचारी धर्मात्मा

और भगवद्भक्त थे। सब पुरुष एक पत्नी व्रत का पालन करते थे। सब स्त्रियाँ परमसती थी।

ब्राह्मण वेदज्ञ, तपस्वी, संतोषी, याज्ञिक थे। क्षत्रिय प्रचण्ड धनुर्धर शूर थे। वैश्य विनयी, परसेवा, उदार, ईमानदार व्यापारी थे और शूद्र सेवा को अपना सौभाग्य मानते थे। पर्वतीय राज्य होने से सब श्रमशील थे। सुन्दर थे और धर्माचरण ने सबको सुखी, सम्पन्न, संतुष्ट बनाया था।

महाराज हंसध्वज ने सुना कि धर्मराज युधिष्ठिर का अश्व इस बार उनकी राज्य-सीमा में आ गया है तो उन्हें लगा कि उनके अन्तर्यामी आराध्य ने उनके हृदय की पुकार सुन ली है यज्ञीय अश्व तो स्वयं यज्ञपुरुष का स्वरूप होता है। यह यज्ञ पुरुष भगवान नारायण इस रूप में अनुकम्पा करने पधारे हैं।

अश्व को पकड़ लो और बहुत आदरपूर्वक लाकर सावधानी से उसकी सेवा करो। महाराज हंसध्वज ने अपने पुत्रों को आज्ञा दी-धर्मराज युधिष्ठिर अखिलेश्वर श्रीकृष्ण चन्द्र के सहारे ही यज्ञ करते हैं। अत: यदि दूसरे अश्व को हमसे लेने में असमर्थ हो जायें तो भगवान वासुदेव को स्वयं आना पड़ेगा। वे जनार्दन पधारें, इस प्रयत्न में उनके पुत्र परिजन अथवा सखा पाण्डवों के बाण से हममें सबको ही समर-शय्या प्राप्त हो जाए तो भी सद्गति हमारा स्वत्व है और कहीं हम सफल हो गये तब तो उन पुरुषोत्तम के पादपद्मों से यह भूमि पवित्र हो जाएगी। हमें उनकी अर्चा का असर मिलेगा।

स्मृतिकार, प्रसिद्ध, विद्वान, वेदवेता कर्म के कुशल रहस्यज्ञाता ऋषियों से सम्मानिज राजपुरोहित युनिवर्य शंङ्ख और लिखित दोनों भाईयों ने महाराज हंसध्वज की प्रशंसा की। दोनों ने राजा की योजना को अनुमति दे दी।

अश्वमेघीय अश्व इस प्रदेश में आकर दौड़ पड़ा था जैसे यहाँ से पूर्व परिचित हो। उसके रक्षक पीछे रह गये थे। चम्पकपुरी के राजकुमारों ने अश्व को पकड़ा तो वह उनके साथ बड़े प्रेम से चल पड़ा। उसने हिनहिनाकर भी किसी को सूचना नहीं दी और न बाँधे जाने का विरोध किया।

अर्जुन तथा उनके साथियों को आश्चर्य हुआ था, जब अश्य पर्वतीय प्रदेश की ओर चल पड़ा था। कोई प्रसिद्ध राज्य इधर नहीं था। साथ आये महर्षि याज्ञवल्क्य के शिष्य ने ध्यानस्थ होने के पश्चात् बतलाया था, अश्व को अवरुद्ध करने वाला कोई पराक्रमी वीर इधर है। अश्व अकारण इस अपने सञ्चरण के अयोग्य दुर्गम प्रदेश में नहीं बढ रहा है। अत: आप सबको सावधान रहना चाहिये।

पर्वतों के पथ सङ्कीर्ण होते हैं वैसे अश्वमेघ यज्ञ के अश्व-रक्षक सब प्रकार की परिस्थिति का सामना करने को प्रस्तुत होकर ही चलते हैं, किन्तु अश्व जब सहसा तीव्र गति से चला तो सब पिछड़ गये। आगे आने पर पता लगा कि अश्व को पकड़ लिया गया है।

चम्पकपुर जैसे बहुत छोटे राज्य के शासक ने अश्व पकड़वाया है। यह जानकर सबको आश्चर्य हुआ। अर्जुन ने संदेश भेजा कि ऐसी धृष्टता का परिणाम बहुत भयंकर होगा। अत: अश्व को लौटा देने की बुद्धिमानी करनी चाहिए।

महाराज हंसध्वज का उत्तर स्पष्ट था संसार में गाण्डीव धन्वा से अपरिचित भला कौन होगा। हमको पता है कि इस समय उनके साथ उनके अपराजित शिष्य सात्यकी, द्वारिका की नारायणी सेना के उप सेनापति कृतवर्मा तथा श्री हरि के ज्येष्ठ पुत्र सुरेन्द्रजयी शम्बर को भी मार देने वाले प्रद्युम्न हैं किन्तु हम पर्वतीय लोगों को भी धनुष पकड़ना आता है। पार्थ चाहे तो अश्व के मस्तक पर बन्धा स्वर्णपत्र में अङ्कित घोषणा-पत्र खोलकर अश्व ले जा सकते हैं। अन्यथा हम प्राण रहते अश्वार्पण नहीं करेंगे।

युद्ध अनिवार्य हो गया। सायंकाल हो चुका था अत: अर्जुन को सेना के साथ नगर से दूर शिविर की स्थापना करनी पड़ी। उधर चम्पकपुरी नगर में राजाज्ञा प्रसारित हो रही थी-कल प्रात: सूर्योदय के पश्चात् एक घटी के भीतर जो युद्ध की आयु का क्षत्रिय शस्त्रसज्ज राजद्वार पर उपस्थित नहीं हो जाएगा, उसे खोलते हुए तेलपूर्ण कड़ाह में डाल दिया जाएगा।

महाराज हंसध्वज के मन का भाव पूरी प्रजा की

वाणी में बोलने लगा था–हमने चतुष्पाद हरि (अश्व) बाँध लिया है। अब इसके द्वारा साक्षात् पधारे श्री हरि की अर्चा करके रहेंगे। अर्जुन उनके इतने प्रिय सखा हैं कि ये प्राण संङ्कट में पड़े तो वे मयूर–मुकुटी प्रकट हुए बिना रह नहीं सकते। हमें कभी न कभी मरना तो है ही। पार्थ के बाणों से मरे हमारे शरीर पर भी उन पार्थ सारथी की दृष्टि पड़ गयी तो कृतकृत्य हो गए हम।

रात्रि युद्ध की सज्जा, समर की चर्चा और प्रियजनों से अन्तिम विदा लेने में व्यतीत हो गयी। प्रात: सूर्योदय पूर्व सदा की भाँति सबने स्नान–संध्या किया और भगवान भास्कर को अर्घ्य देकर कवच धारण किया। महाराज हंसध्वज के द्वार पर आह्वान कर्म का घोष होने से पूर्व ही अधिकांश क्षत्रिय तरुण आ चुके थे। सब शस्त्र–सज्ज सबके वाहन सन्नद्ध। सब दृढ़प्रतिज्ञ प्राण त्याग को। सब आ गये? महाराज हंसध्वज अपने दोनों राजपुरोहितों तथा मंत्रियों के साथ पधारे। उन्होंने मंत्री से पूछा। तेल भरा कड़ाह अग्नि पर चढा था। तेल खोल रहा था। दण्ड की घोषणा की गयी तो इसके उपकरण को प्रस्तुत रहना ही चाहिए।

मंत्री ने आगे बढकर एकत्र पंक्तिबद्ध समूह के दल नायकों से पूछा और लौट आये। महाराज के सम्मुख आकर मस्तक झुकाकर कुछ शिथिला स्वर में निवेदन किया सब आ गये। आपके राजकुमार सुबल, सुरथ, सम, सुदर्शन भी उपस्थित हैं किन्तु...

मंत्री से आगे बोला नहीं गया। महाराज का स्वर उग्र हुआ–किन्तु क्या? कौन नहीं आया? तुमने छोटे राजकुमार सुधन्वा का नाम नहीं लिया, वह उपस्थित नहीं है। मंत्री ने सखेद कहा–मैं उनको नहीं देख सका।

उसे बन्दी बनाकर ले आओ। राजा बहुत क्रुद्ध हो उठे थे–उसने राजाज्ञा सुनकर भी अवहेलना का साहस कैसे किया? ऐसे परम दुर्लभ अवसर पर भी प्रमाद। एक सेनानायक कुछ सैनिकों के साथ चल पड़े। राजकुमार सुधन्वा उन्हें अपने सदन के द्वार पर कवच पहिने रथ में चढ़ने को उद्यत ही मिले, किन्तु राजाज्ञा थी। वे बन्दी बनाये गये।उनकी परमसती पत्नी प्रभावती अभी पति को तिलक करके मुड़ी ही थी। उसने पति को बन्दी बनाये जाते देखा और दौड़कर आराधना कक्ष में पहुँच कर गिर पड़ी।

प्रभावती के प्राण क्रन्दन कर उठे–मेरे अपराध से स्वामी बन्दी हुए। मैंने उन्हें विलम्बित किया। सर्वेश्वर! सर्वसाक्षी! आप धर्म के प्रभु हो। पुरुषोत्तम! यदि मैंने धर्म का अपमान नहीं किया है, यदि मैं सती हूँ, यदि आपके चरणों में मेरी श्रद्धा है तो मेरे स्वामी को राजदण्ड से बचाइये। मेरे इस सर्वस्व के पौरुष से प्रसन्न होने का अवसर उपस्थित होने दीजिये और आपका दर्शन इनके प्रसाद से चम्पकपुरी को प्राप्त हुआ यह सुयश दीजिये।

वह सती अत्यन्त आर्त पुकार करती एकाग्र हो गयी। उसे शरीर की, संसार की, संग्राम की कोई सुधि नहीं रही। उसे तो पूरे दिन बाह्य चेतना नहीं आयी।

सुधन्वा ने मुहूर्त में उठकर स्नान–संध्या कर लिया था। कवच पहिन कर शस्त्र–सज्ज होकर उन्होंने माता से आशीर्वाद प्राप्त किया। बहिन कुबला ने ललाट पर कुमकुम लगाकर अक्षत लगाया। अन्त में पत्नी से विदा लेने पहुँचे तो वह बालिका हठ करने लगी। स्त्री की सफलता स्वामी से संतान पाने में है और मुझे आपका अङ्ग–स्पर्श भी नहीं मिला है। यह असंदिग्ध है कि श्रीहरि के सम्मुख जाकर आपको लौटना नहीं है। मेरा ऋतुकाल सफल करके आप पधारें। मैं आपके सफल काम होने में सार्थक होऊँगी।

पत्नी की प्रार्थना धर्म सङ्गत थी। उसे अपनी पतिगृह आने के पश्चातृ मिलने का भी अवसर नहीं मिला था। इतना विषम समय न होता तो वह बोल भी नहीं पाती। रात्रि में युद्ध चर्चा में उससे मिलना स्मरण नहीं रहा, किन्तु अब उसकी विनय को अस्वीकार करना अधर्म था। युद्ध से सचमुच लौटने की सम्भावना नहीं थी। जिसका अग्नि की साक्षी में पाणिग्रहण किया और श्रुति–मंत्रों से जिसे अपने धर्म में सहचरी बनाने की शपथ ली उसकी जीवन के इस विकट अवसर में पहली और सम्भवत: अन्तिम प्रार्थना भी अस्वीकार कर देना किसी भी प्रकार उचित नहीं था।

सुधन्वा को कवच तथा शस्त्र उतारने पड़े। वे पत्नी की प्रार्थना पूर्ण करके आगमन करके पुन: कवच धारण करके रथ पर बैठने ही जा रहे थे कि बन्दी बना लिए गये। उन्हें विलम्ब हो चुका था।

महाराज हंसध्वज ने पुत्र के विलम्ब का कारण सुना तो अत्यधिक क्रुद्ध होकर बोले-कुलागार-श्रीहरि के स्वागत का अवसर सम्मुख देखकर भी तुझे काम सूझता है धिक्कार है तुझे।

इसका क्या किया जाना चाहिए, महाराज ने राज-पुरोहित से पूछा। प्रश्न सुनते ही महामुनि शङ्ख और लिखित दोनों क्रोध भरकर बोले-दूसरा कोई होता तो उसे राजाज्ञा के अनुसार दण्ड देते आप और आपका अपना पुत्र हो तो हमसे विधान पूछते हैं? मोहवश पुत्र के कारण धर्म की मर्यादा भंग करने वाले अधर्मी के राज्य में हम नहीं रह सकते।

दोनों वहाँ से जाने लगे तो रथ से कूदकर राजा ने दोनों के चरण पकड़ कर क्षमा माँगी। अनुनय-विनय करके उन्हें रोका। सुधन्वा को खौलते तेल के कड़ाह में डाल देने की आज्ञा दे दी।

राजकुमार सुधन्वा अत्यन्त उदार और सर्वप्रिय थे। उनको यह दण्ड सुनकर सब रो पड़े। कोई भी सैनिक उन्हें उस कड़ाह में उठाकर डालने आगे नहीं बढा। किन्तु सुधन्वा ने स्वयं शिरस्त्राण, कवच तथा आभूषण उतार दिये। शस्त्र दूर रख दिया। वे उस कड़ाह के समीप पहुँचे।

हाथ जोड़ कर रोते हुए सुधन्वा प्रार्थना कर रहे थे अन्तर्यामी! आप जानते ही हैं कि मैं आज प्राण त्याग को प्रस्तुत होकर ही आया हूँ किन्तु सब लोग सदा कहेंगे कि सुधन्वा विषयी था। तप्त तेल में जलकर उसकी अपमृत्यु हुई। इस कलंक से मेरी रक्षा कर लो मेरे सर्वस्व! आपके श्रीमुख का दर्शन करते हुए अर्जुन के बाण से उड़ा मेरा सिर आपके पावन पदों में पड़े, यह मेरी अभिलाषा पूर्ण कर दो प्रणतपाल! बहुत बड़ी बाँहें हैं, आपकी ब्रजेन्द्र-नन्दन! इस अपने शरणागत की सुन लो! कभी आपने प्रहलाद की भी रक्षा की है, आज सुधन्वा को बचा लो।

सुधन्वा प्रार्थना करते हुए कड़ाह की परिक्रमा कर रहे थे उन्होंने तीन परिक्रमा पूरी की और भक्त वत्सल भगवान की जय! कहकर कड़ाह में कूद पड़े।

भगवान की जय। भक्त सुधन्वा की जय। सहसा संपूर्ण उपस्थित समुदाय पुकार उठा। सुधन्वा उस कड़ाह के खौलते तेल में मजे से बैठे थे और नेत्र बन्द किये प्रणतपाल गोपाल! गिरिधारी नन्दलाल की ध्वनि में तन्मय हो रहे थे।

यह क्या जादू है? शंक-लिखित दोनों नैष्ठिक कर्म तत्पर धर्मात्मा थे। दोनों उस कड़ाह के पास पहुँचे। उन्होंने पहली पूछताछ प्रारम्भ की-सुधन्वा ने शरीर में कोई तापरोधक औषधिक मली है? किसी मंत्र का जाप किया है अग्नि स्तम्भ के लिए? इसे कोई सिद्धि है?

सबको यह पूछताछ अखर गयी। सेनापति समीप आकर हाथ जोड़कर बोले, किन्तु उनका स्वर रुक्ष था-राजकुमार से आप दोनों भली प्रकार परिचित हैं। वे आपके सम्मुख ही कवच उतार कर कड़ाह में कूदे हैं। वे जिस मंत्र का जाप कर रहे हैं, वह तो आप दोनों भी सुन ही रहे हैं।

दोनों को लगा कि उन्होंने अनावश्यक प्रश्न किया है। दूसरा संदेश किया कड़ाह का तेल ठण्डा नहीं है।

आप परीक्षा कर लें। सेनापति अलग गये, किन्तु दोनों ने परीक्षा करने का निश्चय किया। नारियल मंगवाया उन्होंने और उसे कड़ाह के तेल में डाल दिया। बिना फोड़ा नारियल खौलते तेल में पड़ा तो बड़े शब्द के साथ फूटा और दो टुकड़े उसके हो गये। दोनों टुकड़े उछले। एक शंङ्ख के सिर में लगा, दूसरा लिखित के सिर पर पड़ाक से पड़ा।

नारियल के टुकड़े के लगने की जो चोट लगी, वह तो लगी ही खौलते तेल में भीगे नारियल के टुकड़े लगे तो लगभग मुख का पूरा वह भाग भस्म होकर भुर्ता हो गया। वहाँ माँस लटक आया। भली प्रकार पता लग गया कि तेल कितना उष्ण है।

धिक्कार है हमारे धर्मज्ञान को। नारियल का टुकड़ा सिर में लगते ही महामुनि शंङ्ख की प्रज्ञा-प्रबुद्ध हो गयी-

हमने भक्तापराध किया है। इसका प्रायश्चित है अविलम्ब प्राणोत्सर्ग।

शंङ्ख वैसे ही कूद पड़े उसी कड़ाह में। उन्हें लगा कि जो दण्ड सुधन्वा को उन्होंने दिलवाया, उसे स्वयं स्वीकार करके ही अपराध-मुक्त होंगे। उनके भाई लिखित भी कूदते, किन्तु सुधन्वा ने शंङ्ख को पकड़ लिया था भुजाएँ बढाकर और उस भक्त के स्पर्श से शंङ्ख के लिए भी कड़ाह का तेल शीतल हो गया था। वे भी उसके समीप स्वस्थ खड़े थे।

अब शंङ्ख ने कहा-वत्स अब तुम यहाँ से निकलो। तुम्हारे पिता की आज्ञा पूरी हो गयी और तुम्हारे जैसा पुत्र पाकर वे धन्य हो गये हम तुम्हारे दर्शन से कृत कृत्य हुए।

सुधन्वा ने साग्रह पहले शंङ्ख को निकाला और फिर स्वयं निकले। शंङ्ख हाथ पकड़कर सुधन्वा को राजा के समीप ले गये। सब लोग जय ध्वनि कर रहे थे। महाराज हंसध्वज ने पुत्र को हृदय से लगाकर गद्‌गद् स्वर में कहा पुत्र! मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारी भक्ति श्रीकृष्ण को आने को अवश्य बाध्य कर देगी। तुम हमारे सेनापति। अब ऐसा करो कि पार्थ के प्राण संकट में पड़कर अपने सखा को पुकारने को लिए विवश हो जाए।

सुधन्वा ने पिता को प्रणाम करके कवच धारण किया। वे रथारूढ हुए और शंङ्ख ध्वनि की उन्होंने। चम्पकपुरी की पूरी सेना उनके साथ हो गयी।

अर्जुन को आशा नहीं थी कि उनके सम्मुख कोई अल्पवयस्क बालक युद्ध करने आवेगा। सुधन्वा को देखकर उन्होंने कहा बच्चे! अभी तो तुम खेलने योग्य हो। युद्ध ही करना है तो किसी वीर को आगे करो। तुम नगर में चले जाओ। मैं बच्चों क वध नहीं करता।

सुधन्वा ने कहा-आप भूल ही गये कि आपके बाल पुत्र बभ्रुवाहन ने आपको मार ही दिया था। वीरों की आयु नहीं देखी जाती, यह भी आपको स्मरण नहीं।

अर्जुन समझते थे कि इस पर्वतीय सुन्दर युवक को दो चार बाण लगेंगे तो यह भाग जाएगा। वे उपेक्षापूर्वक ही युद्ध में प्रवृत हुए, किन्तु शीघ्र समझ गये कि पूरी सावधानी यदि उन्होंने नहीं रखी तो यहाँ उलटे उन्हीं को पराजित होना पड़ेगा।

चम्पकपुरी के लोग प्राण पर खेलकर लड़ रहे थे। कृतवर्मा, सात्यकी, प्रद्युम्न आदि में से कोई अवसर नहीं पा सका कि वह अर्जुन की सहायता को आगे बढ सकें और सचमुच सुधन्वा की बाण-वृष्टि ने गाण्डीव धन्वा को संकट की स्थिति में शीघ्र पहुँचा दिया। उनके दिव्यास्त्रों का भी प्रयोग उनके किसी काम नहीं आ सका।

धर्मयुद्ध का नियम है भले प्राण-संकट उपस्थित हो, किन्तु प्रति पक्षी को जिस दिव्यास्त्र का ज्ञान नहीं है, उसका उपयोग नहीं किया जाएगा। अर्जुन ने पूरे महाभारत युद्ध में पाशुपतास्त्र का उपयोग नहीं किया था। इस समय भी वे ब्रह्मास्त्र अथवा अन्य किसी असाधारण दिव्यास्त्र का उपयोग नहीं कर सकते थे। उन्हें साधारण बाणों से ही युद्ध करना था। उनके जैसे प्रसिद्ध धनुर्धर के लिए यही लज्जा की बात थी कि एक साधारण पर्वतीय युवक साधारण बाणों से उनके साथ युद्ध कर रहा था और वे उसे पराजित नहीं कर पा रहे थे।

यह संकट तब बहुत बढ गया, जब सुधन्वा ने अर्जुन के सारथि को मार दिया। अर्जुन को स्वयं अपने रथ की रश्मि दाँतों में दबाकर युद्ध करने को विवश होना पड़ा। दूसरा सारथि उनकी सेना के लोग उन तक पहुँचाने में सफल नहीं हो रहे थे। इससे अर्जुन बहुत विषम स्थिति में पड़ गये।

सुधन्वा ने अपनी बाण-वर्षा और बढाते हुए कहा-पार्थ! अपने नित्य सारथि को छोड़कर आपने अच्छा नहीं किया मरणधर्मा सारथि आपका कब तक साथ दे सकता था। अब भी अपने उस सारथि को स्मरण करो अन्यथा अश्व ले जाना तो दूर प्राण बचाना भी दूर हो जाएगा आज।

अर्जुन के शरीर में सुधन्वा के पैने बाण बराबर प्रवेश कर रहे थे। रथ-रश्मि दाँतों में लेकर धनुष चलाते हुए सव्यसाची किसी प्रकार सुधन्वा के सब बाणों को काट नहीं पा रहे थे। इस संकट में उन्हें श्रीकृष्ण का स्मरण

हुआ। मन ही मन उन्होंने पुकारा-वासुदेव! अब तो सचमुच तुम्हीं मुझे बच सकते हो।

कैसे कहाँ से श्रीकृष्ण आये, यह प्रश्न व्यर्थ है। उन सर्वव्यापी को कहीं भी प्रकट होने में क्या बाधा है। अचानक आकर उन्होंने अर्जुन के रथ की रश्मि उनके मुख से झपट ली और बोले धनंञ्जय! तुम अब युद्ध की ओर पूरा ध्यान दो।

सुधन्वा ने अर्जुन के रथ पर आगे रथ रश्मि कर में सम्हाले उन मयूर मुकुटी नवधन सुन्दर वनमाली श्रीकृष्ण को देखा। मस्तक झुकाकर उसने प्रणाम किया और अर्जुन को ललकारा-गाण्डीवधन्वा! अब तो तुम्हारे सर्वसमर्थ सखा आ गये तुम्हारे समीप। अब तुम मेरे जैसे उद्घत के वध की कोई प्रतिज्ञा कर सकते हो।

बहुत आहत हो गये थे अर्जुन। बड़ा क्रोध आया उन्हें। कृतकृत्य सुधन्वा के स्वर में जो जीवन को धन्य कर लेने के पश्चात् मरण को पुनीत करने की त्वरा थी, इसे वे पहचान नहीं सके। इसे उन्होंने अपने पौरुष को चुनौती मान लिया। अपने त्रोण में से तीन दिव्य बाण निकालकर दिखलाते हुए बोले यदि मैं इन तीन बाणों से ही तेरा सुन्दर मस्तक न काट दूँ तो मेरे पूर्वज उत्तम लोकों से पतित हो और मैं भी पुण्यात्माओं का कोई लोक न प्राप्त कर सकूँ।

अर्जुन की प्रतिज्ञा सुनकर सुधन्वा ने एक बार उनको और श्रीकृष्ण को भी देखा। उसने भी प्रतिज्ञा करते पुकार कर कहा-सव्यसाची! तुम्हारे रथ के ये सारथि ही मेरे सर्वस्व हैं। मैं इन्हीं के बल पर इनके सम्मुख कह रहा हूँ कि यदि मैं तुम्हारे इन तीनों ही बाणों को काट न दूं तो मुझे कभी इनके श्री चरणों की प्राप्ति न हो।

श्रीकृष्ण चन्द ने दोनों की प्रतिज्ञा सुनकर अर्जुन से कहा-विजय! बहुत बुरी बात है कि मेरे समीप रहते हुए मुझसे पूछे बिना ही प्रतिज्ञा कर बैठे हो। इस राज्य में सबके सब पुरुष एक पत्नी व्रती हैं। हम तुम दोनों इस विषय में बहुत दुर्बल हैं। तुमको सब और सोचकर कोई शपथ करनी चाहिए। पहिले भी तुम शपथ करके बहुत बड़ा संकट बुला चुके हो। अब शपथ तो की जा चुकी थी। अर्जुन ने सखा के उपालम्भ का इतना ही उत्तर दिया-आप सर्वसमर्थ समीप हो तो मुझे चिन्ता क्या है।

शपथ-पूर्ति का भार श्रीकृष्ण पर है, यह सूचित करके अर्जुन ने उन तीन बाणों में से एक धनुष पर चढाया। श्रीकृष्ण ने स्पष्ट स्वर में संकल्प किया-मैंने गोवर्धन धारण करके गोपों-गायों की रक्षा का जो पुण्य किया था-वह तुम्हारे इस बाण को प्रदान किया।

बाण धनुष से छूटते ही अग्नि के समान प्रज्वलित हो उठा। सुधन्वा पहिले से धनुष पर बाण चढाये प्रस्तुत था। उसने कहा-जय गोविन्द! और बाण छोड़ दिया। भगवान का पुण्य भी उनके नाम से प्रबल तो नहीं हो सकता। अर्जुन का वह बाण जो सुर-असुर सब के लिये असह्य था, सुधन्वा के बाण से कटकर गिर पड़ा। पृथ्वी कांपने लगी और दिशाओं में आतंक छा गया। स्वयं पार्थ के मस्तक पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें झलकने लगी।

अर्जुन को अब लगा कि प्रतिज्ञा करके उन्होंने सचमुच भूल की है, किन्तु सुधन्वा की ललकार सुनाई पड़ी गुड़ाकेश! दूसरा बाण भी सन्धान कर देखो मैं श्रीकृष्ण का तुच्छ सेवक उसे भी काट दूँगा।

अर्जुन ने दूसरा बाण धनुष पर चढाया तो श्रीहरि ने संकल्प किया-मैं अपने रामावतार का समस्त पुण्य पार्थ के इस बाण को देता हूँ।

''राम'' केवल एक शब्द निकला सुधन्वा के मुख से और उसके बाण ने इस बार भी अर्जुन के बाण को काट फेंका। पृथ्वी और आकाश में सब ओर अग्नि की लपटें उठने लगी। देवताओं के लोक तक अस्त-व्यस्त हो उठे। सब अलक्ष्य सिद्ध हाहाकार कर उठे।

अर्जुन का पूरा शरीर पसीने से भीग गया। वे लड़खड़ा उठे। किसी प्रकार रथ का डण्डा पकड़कर अपने को उन्होंने सम्भाला। ओह अब केवल एक बाण बचा और सुधन्वा हंसता स्वस्थ सम्मुख खड़ा उस शर को भी उठाने को ललकार रहा है।

बहुत व्याकुल होकर बाण उठाते हुए अर्जुन ने श्रीकृष्ण की ओर देखा। उनके नेत्रों में कातर प्रार्थना प्रत्यक्ष थी। श्रीकृष्ण ने एक बार पलकें बन्द की। उन्होंने बाण के पुच्छ भाग में प्रजापति ब्रह्मा को, मध्य में काल को स्थापित किया और बाण की नोक पर स्वयं बैठे।

धनंञ्जय तुम धन्य हो। सुधन्वा ने पुकारा। भक्त भगवान का मर्मज्ञ हो जाता है। उस भक्त को जो कुछ हो रहा था, प्रत्यक्ष दीख रहा था। उसने कहा-तुम्हारे बाण को ये सर्वेश्वरेश्वर अपना पुण्य ही नहीं देते, स्वयं उस पर विराजमान होते हैं। मैं सनाथ हुआ कि तुम्हारे शराग पर बैठकर ये स्वयं आ रहे हैं। मेरा मस्तक लेने, किन्तु अर्जुन सावधान! सुधन्वा इनके श्री चरणों की कृपा से तुम्हारे इस बाण को भी काट देगा।

करुणा वरुणालय श्रीकृष्ण की जय! अर्जुन के बाण छोड़ते ही सुधन्वा के कण्ठ से गूंजा और उसका बाण भी छूट गया। बेचरा बाण के मध्य बैठा काल प्राण बचाकर भाग खड़ा हुअ। उसमें भक्त के भगवन्नाम घोष को सहन करने की शक्ति अथवा साहस कभी नहीं आवेगा। वह जानता था कि वह रुके तो सुधन्वा का बाण उसे अवश्य काट फैंकेगा। काल तो भाग गया, किन्तु सुधन्वा के बाण ने अर्जुन के बाण को वहीं मध्य से काट दिया।

अर्जुन हाथ से गाण्डीव छूटकर गिर पड़ा और स्वयं वे रथ में मूर्छित होकर गिरे, जैसे ही उनका यह तीसरा बाण कटकर गिरा। सुधन्वा की प्रतिज्ञा पूरी हो गयी। भले ब्रह्मलोक तक प्रलय का हाहाकार गूंज उठा और पाताल लोक तक प्रकम्पित हो गया। दिक्पालों के लिए भी अपने स्थानों पर बने रहना कठिन हो गया। पृथ्वी में कितना विध्वंस हुआ उस प्रचण्ड भूकम्प से, कोई गणना नहीं।

सुधन्वा की प्रतिज्ञा पूरी हो गई थी। अब अर्जुन की प्रतिज्ञा पूरी होनी थी। उनके कटकर गिरे बाण का अग्र भाग ऊपर को उछला और सुधन्वा के कण्ठ में लगा। सुधन्वा का सिर कटकर सीधे अर्जुन के रथ में बैठे श्रीकृष्ण के चरणों पर ही गिरा। रथ-रश्मि छोड़कर श्रीकृष्ण ने दोनों हाथों से वह मस्तक उठा लिया। उसी समय उस सिर से एक ज्योति निकली और वह श्रीकृष्ण के मुख में प्रवेश कर गयी।

अर्जुन को कुछ क्षण लगे सचेत होने में। श्रीकृष्ण चन्द आ गये! इस समाचार को सुनते ही चम्पकपुरी नरेश महाराज हंसध्वज ने अपनी सेना को युद्ध रोकने का आदेश दे दिया था। उनकी ओर श्वेत झण्ड उड़ा दिया गया था। वे अपने आराध्य से युद्ध नहीं करना चाहते थे। इन द्वारिकाधीश के दर्शन करके इनकी अर्चा करने को ही वे उत्सुक थे। श्रीकृष्ण के आते ही सुधन्वा ने अर्जुन को उत्तेजित न कर दिया होता तो यह परमगति पाने का अवसर उसे मिलना नहीं था।

भगवान वासुदेव की जय! भक्त-वत्सल गोविन्द की जय! पुकारते महाराज हंसध्वज सेना सहित शस्त्र त्याग कर पैदल आ रहे थे। श्रीकृष्ण चन्द्र रथ से उतरकर सुधन्वा का सिर दोनों हाथों में लिए सिर झुकाये अपराधी की भाँति अपने विशाल दृगों से अश्रु-विमोचन करते खड़े थे। अर्जुन तथा उनके साथ के सब लोग आ गये थे और रथों का त्याग करके शान्त खड़े हो गये। किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या होने वाला है।

मेरे स्वामी यह तो धन्य-धन्य हो गया? महाराज हंसध्वज ने समीप आकर कहा-आपके सम्मुख शरीर छोड़ा और आपके श्री करों में इसका सिर है, ऐसी सद्गति किसे मिलती है। इसने तो मेरे पूरे कुल को पवित्र कर दिया। अब आप संकोच त्याग कर इस मृतिका मुण्ड को फेंक दें और नगर में पधारें। हम सबको आपके चरणार्चन का सौभाग्य प्राप्त होना चाहिए।

पुत्र का कटा सिर जैसे कुछ अर्थ ही नहीं रखता हो, इस उत्साह से महाराज हंसध्वज कह रहे थे-मैं अर्जुन से प्रार्थना करता हूँ कि हमारी धृष्टता क्षमा करे। हम सम्राट युधिष्ठिर के अनुचर हैं। सेना सहित नगर में चलकर सम्राट के प्रतिनिधि हमारा आतिथ्य स्वीकार करें। अश्व ही नहीं यह राजा और इसकी सब सम्पत्ति उन्हीं की है। हम उनकी सेवा करके सनाथ होना चाहते हैं। **(शेष पृष्ठ 34 पर)**

तुलसी का भक्ति-मार्ग

– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

भक्ति-रस का पूर्ण परिपाक जैसा तुलसीदास जी में देखा जाता है वैसा अन्यत्र नहीं। भक्ति में प्रेम के अतिरिक्त आलम्बन के महत्त्व और अपने दैन्य का अनुभव परम आवश्यक अंग है। तुलसी के हृदय से इन दोनों अनुभवों के ऐसे निर्मल शब्द-स्रोत निकले हैं, जिनमें अवगाहन करने से मन की मैल कटती है और अत्यन्त पवित्र प्रफुल्लता आती है। गोस्वामीजी के भक्ति-क्षेत्र में शील, शक्ति और सौन्दर्य तीनों की प्रतिष्ठा होने के कारण मनुष्य की सम्पूर्ण भावात्मिका प्रकृति के परिष्कार और प्रसार के लिए मैदान पड़ा हुआ है। वहाँ जिस प्रकार लोक-व्यवहार से अपने को अलग करके आत्म-कल्याण की ओर अग्रसर होने वाले काम, क्रोध आदि शत्रुओं से बहुत दूर रहने का मार्ग पा सकते हैं, उसी प्रकार लोक-व्यवहार में मग्न रहने वाले अपने भिन्न-भिन्न कर्त्तव्यों के भीतर ही आनन्द की वह ज्योति पा सकते हैं जिससे इस जीवन में दिव्य जीवन का आभास मिलने लगता है और मनुष्य के वे सब कर्म, वे सब वचन और वे सब भाव-क्या डूबते हुए को बचाना, क्या अत्याचारों पर शस्त्र चलाना, क्या स्तुति करना, क्या निन्दा करना, क्या दया से आर्द्र होना, क्या क्रोध से तमतमाना-जिनसे लोक का कल्याण होता आया है, भगवान् के लोक पालन करने वाले कर्म, वचन और भाव दिखाई पड़ते हैं।

यह प्राचीन भक्ति-मार्ग एकदेशीय आधार पर स्थित नहीं, यह एकांगदर्शी नहीं। यह हमारे हृदय को ऐसा नहीं करना चाहता कि हम केवल व्रत-उपवास करने वालों और उपदेश करने वालों पर ही श्रद्धा रखें और जो लोग संसार के पदार्थों का उचित उपभोग करके अपनी विशाल भुजाओं से रणक्षेत्र में अत्याचारियों का दमन करते हैं, या अपनी अन्तर्दृष्टि की साधना और शारीरिक अध्यवसाय के बल से मनुष्य-जाति के ज्ञान की वृद्धि करते हैं, उनके प्रति उदासीन रहें। गोस्वामीजी की रामभक्ति वह दिव्य वृति है, जिससे जीवन में शक्ति, सरसता, प्रफुल्लता, पवित्रता, सब कुछ प्राप्त हो सकती है। आलम्बन की महत्त्व-भावना से प्रेरित दैन्य के अतिरिक्त भक्ति के और जितने अंग हैं-भक्ति के कारण अन्तःकरण की जो और-और शुभ वृत्तियाँ प्राप्त होती हैं-सबकी अभिव्यंजना गोस्वामीजी के ग्रन्थों के भीतर हम पा सकते हैं। राम में सौन्दर्य, शक्ति और शील तीनों की चरम अभिव्यक्ति एक साथ समन्वित होकर मनुष्य के सम्पूर्ण हृदय को-उसके किसी एक ही अंश को नहीं-आकर्षित कर लेती है। कोरी साधुता का उपदेश पाखण्ड है, कोरी वीरता का उपदेश धूर्तता है।

सूर और तुलसी को हमें उपदेशक के रूप में न देखना चाहिए। वे उपदेशक नहीं हैं, अपनी भावुकता और प्रतिभा के बल से लोक-व्यापार के भीतर भगवान् की मनोहर मूर्ति प्रतिष्ठित करने वाले हैं। हमारा प्राचीन भक्ति-मार्ग उपदेशकों की सृष्टि करने वाला नहीं है। सदाचार और ब्रह्मज्ञान के रूखे उपदेशों द्वारा इसके प्रचार की व्यवस्था नहीं है। न भक्तों के राम और कृष्ण उपदेशक, न उनके अनन्य भक्त तुलसी और सूर। लोक-व्यवहार में मग्न होकर जो मंगल-ज्योति इन अवतारों ने उसके भीतर जगाई, उसके माधुर्य का अनेक रूपों में साक्षात्कार करके मुग्ध होना और मुग्ध करना ही इन भक्तों का प्रधान व्यवसाय है। उनका शस्त्र भी मानव-हृदय है और लक्ष्य भी। उपदेशों का ग्रहण ऊपर-ही-ऊपर से होता है। न वे हृदय के मर्म को ही भेद सकते हैं, न बुद्धि की कसौटी पर ही स्थिर भाव से जमे रह सकते हैं। हृदय तो उसकी ओर मुड़ता ही नहीं और बुद्धि उनको लेकर अनेक दार्शनिक वादों के बीच जा उलझती है। उपदेशवाद या तर्क गोस्वामी जी के

अनुसार ''वाक्यज्ञान'' मात्र कराते है, जिससे जीव कल्याण का लक्ष्य पूरा नहीं होता -

वाक्य-ज्ञान अत्यन्त निपुन भव पार न पावै कोई।
निसि गृह मध्य दीप की वातन तम निवृत्त नहिं होई ।।

'वाक्य-ज्ञान' और बात है, अनुभूति और बात। इसी से प्राचीन परम्परा के भक्त लोग उपदेश, वाद या तर्क की अपेक्षा चरित्र-श्रवण और चरित्र-कीर्तन आदि का ही अधिक नाम लिया करते हैं।

प्राचीन भागवत सम्प्रदाय के बीच भगवान् के उस लोक रंजनकारी रूप की प्रतिष्ठा हुई, जिसके अवलम्बन से मानव-हृदय अपने पूर्ण भावसंघात के साथ कल्याण-मार्ग की ओर आपसे आप आकर्षित हो सके। इसी लोक रंजनकारी रूप का प्रत्यक्षीकरण प्राचीन परम्परा के भक्तों का लक्ष्य है; उपदेश देना नहीं। उसी मनोहर रूप की अनुभूति से गद्गद् और पुलकित होना उसी रूप की एक-एक छटा को औरों के सामने भी रखकर उन्हें मानव-जीवन के सौन्दर्य-साधन में प्रवृत्त करना, भक्तों का काम है।

गोस्वामीजी ने अनन्त सौन्दर्य का साक्षात्कार करके उसके भीतर ही अनन्त शक्ति और अनन्त शील की वह झलक दिखाई है जिसके प्रकाश में लोक का प्रमोदपूर्ण परिचालन हो सकता है। सौंदर्य, शक्ति और शील, तीनों में मनुष्य मात्र के लिए आकर्षण विद्यमान है। रूप-लावण्य के बीच प्रतिष्ठित होने से शक्ति और शील को और भी अधिक सौन्दर्य प्राप्त हो जाता है, उनमें एक अपूर्व मनोहरता आ जाती है। जिसे शक्ति-सौन्दर्य की झलक मिल गयी, उसके हृदय में सच्चे वीर होने की अभिलाषा जीवन भर के लिए जग गई, जिसने शील, सौन्दर्य की यह झाँकी पाई उसके आचरण पर इसके मधुर प्रतिबिम्ब की छाप बैठी। प्राचीन भक्ति के इस तत्त्व की ओर ध्यान न देकर जो लोग भगवान् की लोक मंगल विभूति के द्रष्टा तुलसी को कबीर, दादू आदि की श्रेणी में रखकर देखते हैं, वे बड़ी भारी भूल करते हैं।

अनन्त शक्ति-सौंदर्य-समन्वित अनन्त शील की प्रतिष्ठा करके गोस्वामी जी को पूर्ण आशा होती है कि उसका आभास पाकर जो पूरी मनुष्यता को पहुँचा हुआ हृदय होगा वह अवश्य द्रवीभूत होगा-

सुनि सीतापति शील सुभाउ।
मोद न मन, तन पुलक, नयन जल सो नर खेहर खाउ।।

इसी हृदय पद्धति द्वारा ही मनुष्यों में शील और सदाचार का स्थाई संस्कार जम सकता है। दूसरी कोई पद्धति है ही नहीं। अनन्त शक्ति और अनन्त सौंदर्य के बीच से अनन्त शील की आभा फूटती देख जिसका मन मुग्ध न हुआ, जो भगवान की लोकरंजन मूर्ति के मधुर ध्यान में कभी लीन न हुआ, उसकी प्रकृति की कटुता बिल्कुल नहीं दूर हो सकती।

सूर, सुजान, सपूत, सुलच्छन, गनियत गुन गरुआई।
बिनु हरिभजन इंदारुन के फल, तजत नहीं करुआई।।

चरम महत्त्व के इस भव्य मनुष्य-ग्राह्य रूप के सम्मुख भावविह्वल भक्त-हृदय के बीच जो-जो भाव तरंगें उठती हैं, उन्हीं की माला विनय-पत्रिका है। महत्त्व के नाना रूप और इन भाव-तरंगों की स्थिति परस्पर बिम्ब-प्रतिबिम्ब समझनी चाहिए। भक्ति में दैन्य, आशा, उत्साह, आत्म-ग्लानि, अनुताप, आत्म-निवेदन आदि की गंभीरता उस महत्त्व की अनुभूति की मात्रा के अनुसार समझिए। महत्त्व का जितना ही सान्निध्य प्राप्त होता जाएगा-उसका जितना ही स्पष्ट साक्षात्कार होता जाएगा-उतना ही अधिक स्फुट भावों का विकास होता जाएगा, और इन पर भी महत्त्व की आभा चढ़ती जाएगी। मानो ये भाव महत्त्व की ओर बढ़ते जाते हैं और महत्त्व इन भावों की ओर बढ़ता जाता है। इस प्रकार लघुत्व का महत्त्व में लय हो जाता है।

सारांश यह है कि भक्ति का मूल तत्त्व है महत्त्व की अनुभूति। इस अनुभूति के साथ ही दैन्य अर्थात् अपने लघुत्व की भावना का उदय होता है। इस भावना को दो ही पंक्तियों में गोस्वामीजी ने बड़े ही सीधे-सादे ढंग से व्यक्त कर दिया है-

राम सों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो?
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो ?

प्रभु के महत्त्व के सामने होते ही भक्त के हृदय में अपने लघुत्व का अनुभव होने लगता है। उसे जिस प्रकार प्रभु का महत्त्व वर्णन करने में आनन्द आता है, उसी प्रकार अपना लघुत्व-वर्णन करने में भी। प्रभु की अनन्त शक्ति के प्रकाश में उसकी असामर्थ्य का, उसकी दीन दशा का बहुत साफ चित्र दिखाई पड़ता है, और वह अपने जैसा दीन-हीन संसार में किसी को नहीं देखता। प्रभु के अनन्त शील और पवित्रता के सामने उसे अपने में दोष-ही-दोष और पाप-ही-पाप दिखाई पड़ने लगते हैं। इस अवस्था को प्राप्त भक्त अपने दोषों, पापों और त्रुटियों को अत्यन्त अधिक परिमाण में देखता है और उनका जी खोलकर वर्णन करने में बहुत कुछ सन्तोष लाभ करता है। दम्भ, अभिमान, छल, कपट आदि में से कोई उस समय बाधक नहीं हो सकता। इस प्रकार अपने पापों की पूरी सूचना देने से जी का बोझ ही नहीं, सिर का बोझ भी कुछ हल्का हो जाता है। भक्त के सुधार का भार उसी पर न रहकर बँट-सा जाता है।

ऐसी उच्च मनोभूमि की प्राप्ति, जिसमें अपने दोषों को झुक-झुककर देखने ही की नहीं, उठा-उठाकर दिखाने की भी प्रवृत्ति होती है; ऐसी नहीं जिसे कोई कहे कि यह कौन बड़ी बात है। लोक की सामान्य प्रवृत्ति तो प्रायः इसके विपरीत ही होती है, जिसे अपनी ही मानकर गोसाईंजी कहते हैं-

जानत हू निज पाप जलधि जिय,
जल-सीकर सम सुनत लरौं।
रज सम पर-अवगुन सुमेरु करि,
गुन गिरि सम रज तें निदरों।।

ऐसे वचनों के सम्बन्ध में यह समझ रखना चाहिए कि ये दैन्य भाव के उत्कर्ष की व्यंजना करने वाले उद्‌गार हैं। ऐतिहासिक खोज की धुन में इन्हें आत्म-वृत्त समझ बैठना ठीक न होगा। इन शब्द-प्रवाहों में लोक की सामान्य प्रवृत्ति की व्यंजना हो जाती है, इससे इनके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने दोषों और बुराइयों की ओर दृष्टि ले जाने का साहस प्राप्त कर सकता है। दैन्य भक्तों का बड़ा भारी बल है।

परम महत्त्व के सान्निध्य से हृदय में उस महत्त्व में लीन होने के लिए जो अनेक प्रकार के आन्दोलन उत्पन्न होते हैं, वे ही भक्तों के भाव हैं। कभी भक्त अनन्त रूपराशि के अनुभव से प्रेम-पुलकित हो जाता है, कभी अनन्त शक्ति की झलक पाकर आश्चर्य और उत्साह से पूर्ण होता है, कभी अनन्त शील की भावना से अपने कर्मों पर पछताता है और कभी प्रभु के दया-दाक्षिण्य को देख मन में इस प्रकार का ढाढ़स बाँधता है-

कहा भयो जो मन मिलि कलिकालहि
कियों भौंतुवा भौर को है।
तुलसिदास सीतल नित एहि बल,
बड़े ठेकाने ठौर को है।।

दिन-रात स्वामी के पास रहते-रहते जिस प्रकार सेवक की कुछ धड़क खुल जाती है, उसी प्रकार प्रभु के सतत ध्यान से जो सान्निध्य की अनुभूति भक्त के हृदय में उत्पन्न होती है, उसके कारण वह कभी-कभी मीठा उपालंभ भी देता है।

भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं रह जाता। भक्ति के बदले में उत्तम गति मिलेगी, इस भावना को लेकर भक्ति हो ही नहीं सकती। भक्त के लिए भक्ति का आनंद ही उसका फल है। वह शक्ति, सौन्दर्य और शील के अनन्त समुद्र के तट पर खड़ा होकर लहरें लेने में ही जीवन का परम फल मानता है।

गोस्वामीजी एक बार वृन्दावन गए थे। वहाँ किसी कृष्णोपासक ने उन्हें छेड़कर कहा-''आपके राम तो बारह ही कला के अवतार हैं। आप श्रीकृष्ण की भक्ति क्यों नहीं करते जो सोलह कला के अवतार है?'' गोस्वामीजी बड़े

(शेष पृष्ठ 25 पर)

गतांक से आगे

बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास

– खींवसिंह सुलताना

महाराजा सरदार सिंह

जन्म :– सरदार सिंह का जन्म वि.सं. 1875 को हुआ था और महाराजा रतन सिंह की मृत्यु के बाद वि.सं. 1908 में वह बीकानेर के शासक बने।

प्रजाहित में महाराजा रतन सिंह की ही तरह महाराजा सरदार सिंह ने भी अनेक नियम कानून बनाए। महाराजा ने फालतू के खर्चे को रोकने के लिए कई कानून बनाए। मृत्यु-भोज अन्य प्रकार के खाने में लापसी के अतिरिक्त अन्य प्रकार के खाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। विवाह के अवसर पर भी खर्च को कम करने के लिए कुछ कानून बनाए गए।

चूरू पर सेना भेजना :– चूरु का इलाका पहले ही खालसा कर लिया गया था। वि.सं. 1911 में ठाकुर ईश्वर सिंह (चूरू) ने आक्रमण कर अपनी जागीर (चूरू) पर पुनः अधिकार कर लिया। इस पर फौजदार हुकमसिंह, ठाकुर हरनाथ सिंह (मघरासर) आदि ने सेना सहित चूरू को घेर लिया। विद्रोहियों ने उनका सामना किया, पर उनकी पराजय हुई और ईश्वर सिंह युद्ध में मारा गया।

सिपाही विद्रोह में अंग्रेज सरकार की सहायता करना :– 1857 में ब्रिटिश सरकार की नीतियों के विरुद्ध उत्तर भारत में विद्रोह का सूत्रपात हुआ। हांसी और सिरसा में रखी ब्रिटिश सेनाओं ने विद्रोह कर दिया। महाराजा सरदार सिंह ने सेना सहित जाकर ब्रिटिश परिवारों की रक्षा की और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया।

मृत्यु :– वि.सं 1929 को महाराजा सरदार सिंह का स्वर्गवास हुआ। महाराजा ने प्रजा की भलाई के लिए अनेक कानून बनाए। प्रजा की वास्तविक दशा का ज्ञान करने के लिए वे स्वयं रियासत का दौरा किया करते थे।

महाराजा डूंगरसिंह

महाराजा सरदार सिंह के निःसंतान मरने पर डूंगर सिंह वि.सं. 1929 में बीकानेर के शासक बने। उनका जन्म वि.सं. 1911 में हुआ था।

महाराजा डूंगर सिंह ने गद्दी पर बैठते ही भादरा और चूरू के विद्रोही ठाकुरों को (जो कि राज्य के अपराधियों को अपने यहाँ शरण देते थे) सैन्य बल के प्रयोग से उनसे राज्यहित के विरुद्ध कार्य ना करने का वचन ले लिया।

काबुल की लडाई में ब्रिटिश सरकार की सहायता करना :– वि.सं. 1935 में रूस के साथ अफगानिस्तान के अमीर की बढ़ती मित्रता से नाराज होकर ब्रिटिश सरकार ने अफगानिस्तान के साथ युद्ध की घोषणा कर दी। महाराजा ने अंग्रेजों द्वारा सहायता मांगने पर 800 ऊंटों को युद्ध में भेजा।

मृत्यु :– वि.सं. 1944 में बीमारी के कारण महाराजा का स्वर्गवास हो गया। अपने पूर्वजों की भाँति महाराजा डूंगर सिंह भी साहसी, न्यायप्रिय, उदार, ईश्वरभक्त व निराभिमानी शासक थे।

महाराजा गंगासिंह

महाराजा गंगासिंह का जन्म वि.सं. 1937 में हुआ था। अपने बड़े भाई महाराजा डूंगरसिंह के निःसंतान मरने पर वि.सं. 1944 में आप बीकानेर के शासक बने। शासक बनने के कुछ ही दिनों बाद उनके पिता लालसिंह का देहांत हो गया। प्रारम्भिक शिक्षा के लिए मेयो कॉलेज से पंडित रामचन्द्र दुबे को बुलाकर इनका शिक्षक नियुक्त किया गया। वि.सं. 1946 में उच्च शिक्षा के लिए महाराजा मेयो कॉलेज, अजमेर भेजे गए। वि.सं. 1951 में मेयो कॉलेज से अपना अध्ययन पूरा कर ये बीकानेर लौट आए और शासन संबंधी भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करने लगे।

महाराजा को राज्याधिकार मिलना :– वि.सं. 1955 में महाराजा की आयु 18 वर्ष होने पर राजपूताना के एजी.जी. ने बीकानेर जाकर अंग्रेज सरकार की तरफ से इनको बीकानेर राज्य का संपूर्ण अधिकार सौंप दिया।

वि.सं. 1956 का भीषण अकाल :– वि.सं. 1956 में देश के बहुत बड़े भाग में भीषण अकाल पड़ा, बीकानेर भी इससे अछूता ना रहा, खेती सारी नष्ट हो गई। ऐसे समय महाराजा ने रोजगार के लिए शहर पनाह का कार्य बढ़ाया, गजनेर की झील खुदवाई गई, जिससे प्रजा को रोजगार मिला। जगह-जगह अन्न भण्डार खोल दिए गए। गाँवों में गंगारिसाला के द्वारा अन्न पहुँचाया गया। किसानो को बीज और बैलों को खरीदने के लिए राज्य की ओर से सहायता उपलब्ध करवाई गई। महाराजा साहब स्वयं घूम-घूमकर अकाल राहत कार्यों का निरीक्षण करते।

चीन के वाक्सर युद्ध में ब्रिटिश सरकार की सहायता करना :– चीन के साथ युद्ध में ब्रिटिश सरकार की सहायता के लिए महाराजा गंगासिंह गंगारिसाला के साथ युद्ध में शामिल हुए। उस युद्ध में बीकानेर की सेना (गंगारिसाला) ने पिटांग के किले की विजय तथा पार्टिगफू की चढ़ाई में शत्रु सेना का वीरतापूर्वक सामना किया। युद्ध के बाद भारत लौटने पर इनका भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक रूप से सम्मान किया गया।

शासन प्रणाली में परिवर्तन करना :– महाराजा ने महकमा खास का निर्माण कर कार्य को छ: विभागों में वितरित कर प्रत्येक विभाग का एक मंत्री नियुक्त कर दिया। मंत्रियों की नियुक्ति योग्यता के आधार पर की गई। फौजदारी, स्टाम्प, बिक्री, आबकारी आदि के कानूनों का निर्माण कर एक समान व्यवस्था स्थापित की गई। सेना और पुलिस विभाग को आधुनिक ढंग से संगठित किया गया। शिक्षा के विस्तार के लिए गाँवों में भी विद्यालय खोले गए। बीकानेर शहर में बालक-बालिकाओं के लिए पृथक विद्यालय खोले गए। रेल्वे लाइन का विस्तार किया गया।

प्रथम विश्व शुद्ध में भाग लेना :– प्रथम विश्व युद्ध में–महाराजा गंगासिंह के नेतृत्व में गंगारिसाला ने भी भाग लिया। बीकानेर की सेना ने मिश्र व तुर्की में युद्धों में भाग लिया। स्वेज नहर की रक्षा का कार्य गंगारिसाले के बिना अधूरा समझा जाता था। बीकानेर की सेना ने पैलेस्टाइन, दुइदार, कतिया रीत्रम, गफ गफ, बीर-एल-अब्द, सलमाना आदि की लड़ाइयों में वीरतापूर्वक भाग लिया और शत्रु सेना को हर बार पीछे हटने पर मजबूर किया। इस युद्ध में बीकानेर की सेना की अभूतपूर्व वीरता ने मित्र राष्ट्रों की विजय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी कारण से वियना के साही सम्मेलन में भारतीय नरेशों में से मात्र गंगासिंह जी को ही शामिल होने का अवसर मिला।

महाराज कुमार को शासनाधिकार देना :– महाराजा गंगासिंह ने कु. शार्दूलसिंह को मेयो कॉलेज, अजमेर व यूरोप में विद्याध्ययन के लिए ना भेजकर आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए अपनी ही देख-रेख में अनुभवी आचार्यों से उन्हें शिक्षा दिलवाई। उसके बाद उन्हें राज्य के प्रत्येक विभाग में काम करने का अवसर दिया गया। वि.सं. 1997 में कु. शार्दूलसिंह को मुख्यमंत्री और कौंसिल का सभापति निर्वाचित करने की घोषणा की।

गंगनहर को लाना :– मरुभूमि होने से जल की उपलब्धि कम होने के कारण राज्य में प्राय: अकाल की सी स्थिति रहती थी। इस पर विचार कर महाराजा गंगासिंह जी ने सतलज नदी से एक नहर लाने का विचार कर अंग्रेज सरकार से लिखा-पढ़ी आरंभ की। इस नहर का निर्माण बड़ा ही व्ययसाध्य था। इसे लाने में बीकानेर राज्य का पौने तीन करोड़ रुपया व्यय होने का अनुमान किया गया जो कि निर्माण कार्य के पूरा होने तक और बढ़ गया। गंगनहर का निमाण कार्य वि.स. 1984 में पूरा हो गया। उसी वर्ष अक्टूबर में लार्ड इर्विन द्वारा नहर का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर पं. मदनमोहन मालवीय की उपस्थिति में ही सभी धार्मिक कृत्य पूरे किए गए। नहर

निर्माण से मरुभूमि में भी हरियाली छा गई और दूर-दूर के क्षेत्र तक कृषि कार्य प्रारम्भ हो गया। महाराजा गंगासिंह जी को उनके इस कार्य के कारण आधुनिक युग का 'भागीरथ' भी कहा जाता है।

महाराजा गंगासिंह जी नरेन्द्र सभा के (भारतीय नरेशों की सभा) के अध्यक्ष रहे। उन्होंने तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया।

मृत्यु :- वि.सं. 1999 में महाराजा गंगासिंह जी का बम्बई में स्वर्गवास हुआ। महाराजा गंगासिंह जी का व्यक्तित्व अपने पूर्वजों की भाँति उच्च व उज्ज्वल था। वे एक प्रजावत्सल शासक थे इनके समय में बीकानेर का आधुनिकीकरण हुआ और प्रजा के विकास के लिए चहुँमुखी कार्य हुए। इनका हृदय बड़ा कोमल और उदार था। विदेशों में हुए युद्धों में इन्होंने अपनी सेना का स्वंय नेतृत्व किया।

महाराजा शार्दूल सिंह

महाराजा गंगासिंह की मृत्यु के बाद कु. शार्दूलसिंह बीकानेर के शासक बने । इनको अपने पिता के समय से ही शासन कार्य का अनुभव प्राप्त था। अपने पिता महाराजा गंगासिंह की तरह इन्होंने भी प्रजा हित के कार्य किए। भारत की स्वतंत्रता के साथ ही रियासतों का एकीकरण हो गया और शासन कार्य लोकतांत्रिक पद्धति से होने लगा।

पृष्ठ 22 का शेष

तुलसी का भक्ति-मार्ग

भोलेपन के साथ बोले- ''हमारे राम अवतार भी हैं, यह हमें आज मालूम हुआ।'' राम भगवान् के अवतार हैं इससे उत्तम फल या उत्तम गति दे सकते हैं, बुद्धि के इस निर्णय पर तुलसी राम से भक्ति करने लगे हों, यह बात नहीं है। राम तुलसी को अच्छे लगते हैं, उनके प्रेम का यदि कोई कारण है तो यही।

जौ जगदीश तौ अति भलो, जौ महीस तौ भाग।
तुलसी चाहत जनम भरि, रामचरन अनुराग।।

तुलसी को राम का लोकरंजन रूप वैसा ही प्रिय लगता है जैसा चातक को मेघ का लोकसुखदायी रूप। राम प्रिय लगने लगे, राम की भक्ति प्राप्त हो गई, इसका पता कैसे लग सकता है? इसका लक्षण है मन का आप से आप सुशीलता की ओर ढल पड़ना-

तुम अपनायो, तब जनिहीं जब मन फिर परिहै।

इस प्रकार शील को राम-प्रेम का लक्षण ठहराकर गोस्वामी जी ने अपने व्यापक भक्ति-क्षेत्र के अन्तर्भूत कर लिया है।

भक्त यही चाहता है कि प्रभु के सौंदर्य, शक्ति आदि की अनन्तता की जो मधुर भावना है वह अबाध रहे- उसमें किसी भी प्रकार की कसर न आने पाए। अपने ऐसे पापी की सुगति को वह प्रभु की शक्ति का एक चमत्कार समझता है। अतः उसे यदि सुगति न प्राप्त हुई तो उसे इसका पछतावा न होगा, पछतावा होगा इस बात का कि प्रभु की अनन्त शक्ति की भावना बाधित हो गई-

नाहिन नरक परत मो कहें डर जद्यपि हौं अति हारो।
यहि बड़ि त्रास दास तुलसी कहें नामहु पाप न जारो।।

प्रभु के सर्वगत होने का ध्यान करते-करते भक्त अन्त में जाकर उस अवस्था को प्राप्त करता है जिसमें वह अपने साथ-साथ समस्त संसार को उस एक अपरिच्छिन्न सत्ता में लीन होता हुआ देखने लगता है, और दृश्य भेदों का उसके ऊपर उतना जोर नहीं रह जाता। तर्क या युक्ति ऐसी अवस्था की सूचना भर दे सकती है-''वाक्य-ज्ञान'' भर करा सकती है। संसार में परोपकार और आत्मा-त्याग के जो उज्ज्वल दृष्टान्त कहीं-कहीं दिखाई पड़ा करते हैं, वे इसी अनुभूति मार्ग में कुछ-न-कुछ अग्रसर होने के हैं। यह अनुभूति-मार्ग या भक्तिमार्ग बहुत दूर तक तो लोक-कल्याण की व्यवस्था करता दिखाई पड़ता है; पर और आगे चलकर यह निस्संग साधक को सब भेदों से परे ले जाता है।

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– संकलन : भंवरसिंह मांडासी

श्रद्धांजलियाँ व संदेश

15. डूंगरपुर के महारावल लक्ष्मणसिंह का टेलीग्राम–

17th March, 1939. In your revered father Rajput community has lost a great personality. I extend to you my herty sympathy in your sad berevement Maharaja.

16. महाराजा शिवदानसिंह जोबट का टेलीग्राम–

Jobat State, 17th March, 1939. I was shocked to hear the sad demise of your father. Undoubtedly he was a jewel of our Rajput community. Unreparable.

Shivdan Singh

17. झालावाड़ के महाराजा राजेन्द्रसिंह के संवेदना पत्र का अंश–

10, Parthviraj Road, New Delhi
17th March, 1939

My dear brother,

I was distressed to know from your telegram the sad demise of your noble father. I always regarded him as one of my best friends, a true kshatriya, who would always be available in time of need a prince among men, and an embodiment of the sterling qualities necessary to make a good Rajput. Your's affectionately. **Rajendra Singh**

18. दीवान बहादुर हरविलास शारदा के पत्र का अंश–

Harniwas, Civil Line, Ajmer
14th March, 1939

My dear Kanwar Saheb. Please accept my sincere condolence on the great bereavment you have suffered. Rao Gopal Singh Ji Bahadur was a true Rajput, generous, brave and real helper. He had the old Rajput spirit in him and it is not easy to find another man like him.

Harbilas Sarda

19. बीकानेर नरेश महाराजा गंगासिंह का टेलीग्राम–

Delhi 15th March, 1939. Very sorry to learn of demise of Raoji Sahib. I send you my sympathy in your irreperable loss.

Maharaja Bikaner

20. जोधपुर महाराज उम्मेदसिंह का टेलीग्राम–

Jodhpur, 14th March, 1939. Extremely sorry to hear of the sad demise of Rao Sahib. Please accept and convey to all femily my sincere condolence. **Maharaja Jodhpur**

21. रूपाहेली के ठाकुर चतुरसिंह का टेलीग्राम–

Rupaheli 13.3.39. Extremely sorry for loss of the Hero. **Thakur Chatur Singh**

उपर्युक्त संवेदना सूचक तारों और पत्रों के अलावा राणा धौलपुर, राजाधिराज शाहपुरा, सैलाना और सीतामऊ के महाराजा, राजा साहब सोहावल (बघेल खण्ड) राणा साहब खजूर गाँव (यू.पी.), महाराजा लक्ष्मणसिंह करजाली (मेवाड़), राजा साहब शिवगढ़ (यू.पी.), महाराज विजयनगर, राजा सज्जनसिंह खण्डेला, ठा. जयसिंह मण्डावा, रावल मदनसिंह नवलगढ़, रावल हरनाथसिंह डुण्डलोद आदि महानुभावों ने संवेदना पत्र भेजकर उस महान आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की थी जो उनकी व्यापक लोकप्रियता और ख्याति की द्योतक थी।

समकालीन लोगों की दृष्टि में राव गोपालसिंह

(1) ‘‘खरवा की भूमि हमारे लिए राष्ट्रीय तीर्थ है,

जहाँ पर राव गोपालसिंह जैसे नर-रत्न ने जन्म लिया और देश की आजादी के लिए अनुपम त्याग का उदाहरण पेश करके हम लोगों को प्रेरणा दी।''

– डॉ. कैलाशनाथ काटजू

(स्वाधीन भारत के प्रथम केन्द्रीय गृहमंत्री)

(2) जब राजपूताने का कोई राजा विदेशी ताकत के खिलाफ खुले तौर पर खड़ा नहीं हो रहा था ऐसे समय में शाहपुरा के श्री केशरीसिंह और खरवा के ठाकुर गोपालसिंह व उनके साथियों का जीवन की परवाह न करते हुए अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ खड़ा होना एक बहुत बड़ी बात थी।

(बरकतुल्ला खाँ, मुख्यमंत्री राजस्थान**)**

(3) मेरे प्रेरणा पुंज खरवा राव गोपालसिंह जी और बारहठ केसरीसिंह जी अभिन्न मित्र तथा क्रान्ति में सहयोगी थे। उन दोनों विभूतियों के स्मरण मात्र से हृदय में स्फूर्ति आती है। आत्मबल बढ़ता है। कुछ करने को मन करता है। उनके सम्मान में सदा ही मस्तक झुकता है। उनका पुण्य स्मरण मेरा नित्य कृत्य है। **(राजा कल्याणसिंह भिणाय)**

(4) जिस वक्त सारे हिन्दुस्तान में क्रान्ति की आग प्रज्वलित थी, उस आग से राजस्थान भी प्रज्वलित हो उठा। उस यज्ञ के प्रमुख और प्रथम होता थे खरवा के राव गोपालसिंह जी और बारहठ केसरीसिंह जी और अमर शिक्षक अर्जुन लाल जी सेठी। वे महापुरुष क्रान्तिकारियों के आधार स्तम्भ थे, प्रेरक थे और मार्गदर्शक भी।

(रतनलाल जोशी)

(5) जीवन और उसके पर्यन्त वे ही महिमा मण्डित होते हैं, जो दासता, विलासता को तिलांजलि देकर अपना उत्सर्ग किसी महान ध्येय के लिए करते हैं। राव गोपालसिंह खरवा और बारहठ केसरीसिंह का ध्येय भी राष्ट्रीय स्वातंत्र्य था। देश को गुलामी से स्वाधीन करने का था। नि:संदेह त्याग का अक्षय होता है और उत्सर्ग अमर।

(श्री फतेहसिंह मानव)

(6) अजमेर में राजनैतिक कान्फ्रेंस का दूसरा जल्सा हो रहा था। वहीं खरवा के राव गोपालसिंह को देखा। बुढ़ापा आ चला था, परन्तु उनके राजपूती बांकेपन में फर्क नहीं पड़ा था। साथ ही उनके राजपूत प्रधान विचारों में भी अन्तर नहीं आया था। जिन लोगों ने उनका अन्तकाल देखा है, उनसे मालूम होता है कि उनकी ईश्वर में आस्था कितनी गजब की थी।

(रामनारायण चौधरी, अध्यक्ष भारत सेवा समाज**)**

(7) देश की आजादी हेतु क्रान्तिकारियों ने अपने सर्वस्व और जीवन की बलि देकर जो उल्लेखनीय कार्य किया था, उसके आधार पर स्वाधीनता प्राप्ति के लिए उन्हें कहाँ तक कोई श्रेय दिया जा सकता है या दिया जाना चाहिए? इस सम्बन्ध में इतिहासकार अब तक किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाए हैं। क्योंकि तदर्थ अभी और अति आवश्यक कालान्तर की अनिवार्य दूरी की अपेक्षा है। आगे चलकर वे किसी निर्णय पर पहुँचें, उससे इन बलिदानी क्रान्तिकारियों की महत्ता पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। उन हुतात्माओं ने कभी भी इस ओर ध्यान तक भी नहीं दिया होगा। वे वस्तुत: भारत की स्वाधीनता की नींव के पत्थर हैं, जिसे उन्होंने अपने रुधिर से ही नहीं सींचा परन्तु स्वयं भी उसमें पड़ गए। स्वतंत्रता संग्राम के उन सैंकड़ों दधिचियों के वे अस्तिपंजर-स्वयं पर निर्मित पश्चात् कालीन स्वाधीनता का भार चिरकाल तक वहन करते रहेंगे।

(डॉ. रघुवीरसिंह, सीतामऊ मालवा**)**

स्वतंत्र भारत की सरकार द्वारा वचन भंग

राव गोपालसिंह खरवा को सलेमाबाद मन्दिर में पुलिस व सेना द्वारा घेरे जाने का वर्णन पीछे किया जा चुका है। खूनी संघर्ष को टालने के लिए तत्कालीन ए.जी.जी. के पुलिस असिस्टेन्ट राजपूताना के इन्सपेक्टर जनरल पुलिस मि. एल.एम. केई ने दिनांक 26.8.1915 को राव गोपाल सिंह को वचन दिया था कि वे अपने अस्त्र-शस्त्र भगवान की प्रतिमा के आगे समर्पित कर देंगे

तो ये अस्त्र-शस्त्र मन्दिर की सम्पत्ति माने जाएँगे व उन अस्त्र-शस्त्रों को वहाँ से हटाने का किसी को भी अधिकार नहीं होगा।

इसी प्रकार मि. केई ने यह भी आश्वासन दिया था कि उनके ऊपर डिफेन्स ऑफ इण्डिया एक्ट का उल्लंघन करने के अलावा अन्य कोई अभियोग नहीं है। इसी आश्वासन का सम्मान रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने काशी षड्यंत्र केस से राव गोपालसिंह का नाम हटा लिया था।

ऊपर दिये गए आश्वासनों के अनुसार जब तक देश पर अंग्रेजों का शासन रहा, उपर्युक्त अस्त्र-शस्त्रों को मंदिर में रहने दिया गया किन्तु स्वतंत्र-भारत में इस आश्वासन की उपेक्षा की गई।

जिस समय की यह घटना है उस समय आर्म्स एक्ट राजपूताने में लागू नहीं था। बाद में आर्म्स एक्ट लागू होने पर शस्त्रों के, जो मन्दिर की सम्पत्ति थी, मन्दिर के महन्त जी के नाम से लाइसेन्स बना दिए गये। यह शस्त्र भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़े गए क्रान्तिकारी संघर्ष के स्मृति-चि- थे। इन शस्त्रों को राष्ट्र के इतिहास की धरोहर समझा जाना चाहिए था। जबकि लाइसेन्स बनाकर इन शस्त्रों को एक व्यक्ति की सम्पत्ति का रूप दे दिया गया,जो स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों का अनादर करने जैसी घटना थी। जिसके घातक परिणाम आगे प्रकट हुए।

उपर्युक्त सलेमाबाद स्थित कृष्ण मन्दिर जहाँ अस्त्र-शस्त्र समर्पित किये गये थे, निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है। वहाँ के वर्तमान आचार्य 'श्री जी' श्री राधा सर्वेश्वर शरणदेवाचार्य ने बताया कि सन् 1962 में जब चीन का भारत पर आक्रमण हुआ तब वे नाबालिग थे व पीठ का संपूर्ण कार्य अधिकारी जी देखते थे। उस समय राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए सरकार धन व शस्त्रों की माँग कर रही थी। उसी संदर्भ में अजमेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री टी. एन. चतुर्वेदी जी ने अधिकारी जी को बुलाकर कहा कि-''आपके लाईसेन्स पर इतने शस्त्र नहीं रखे जा सकेंगे। सरकार इन्हें जब्त कर लेगी अत: आप इनको राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दान देकर यश अर्जित कर सकते हो।''

इस प्रकार जिलाधीश ने अप्रत्यक्ष रूप से भय दिखाकर उपर्युक्त अस्त्र-शस्त्रों में से दो राइफलें व दो रिवाल्वर सुरक्षा कोष हेतु प्राप्त कर लिया।

मि. केई ने भारत सरकार की ओर से जो आश्वासन राव गोपालसिंह खरवा को दिया था, उसको भंग करने का जिलाधीश जैसे छोटे अधिकारी को कोई अधिकार नहीं था। हो सकता है जिलाधीश को उपर्युक्त घटनाक्रम का पता न हो, फिर भी यह भारत सरकार द्वारा दिए गये वचन को भंग करने की कार्यवाही थी, जिसे गम्भीरता से लिया जाना चाहिए।

राष्ट्र की ऐतिहासिक धरोहरें यदि इसी प्रकार नष्ट होती रही तो राष्ट्र के लिए उत्सर्ग करने की भावना को निश्चित रूप से ठेस पहुँचेगी। परिणामस्वरूप त्याग व बलिदान की परम्परा ही समाप्त प्राय: हो जाएगी।

अत: सरकार का यह उत्तरदायित्व है कि वह उन शस्त्रों का पता लगाये, जिनको राष्ट्रीय सुरक्षा कोष हेतु सलेमाबाद मंदिर से जिलाधीश अजमेर ने प्राप्त किया था। उन शस्त्रों को पुन: मंदिर में स्थापित किया जाये। राव गोपालसिंह द्वारा समर्पित सभी शस्त्रों के लाईसेन्स रद्द किये जाएँ, उन्हें राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में मंदिर में रखा जाए व उनकी सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जाए।

सरकार यदि अपने उत्तरदायित्व में असफल रहती है तो जनता को इसके लिए आंदोलन करना चाहिए व न्यायालय के माध्यम से न्याय प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। यदि जनता ऐसा कर सकी तो देश व क्रान्तिकारियों के प्रति उनकी सच्ची श्रद्धा का यह प्रमाण होगा।

साभार- **'राव गोपालसिह खरवा'**

लेखक- **स्व. सुरजनसिंह झाझड़**

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

गुढ़ा सलाथिया (जम्मू का चित्तौड़गढ़)

चित्तौड़ की रक्त रंजित पावन धरा साहस और स्वाभिमान, त्याग और बलिदान, स्वतंत्रता प्रेम और संघर्षशीलता से परिपूरित, जौहर की ज्वाला से परिशोधित और भक्ति सरिता से सिंचित वह धरा है जो सदैव कर्तव्यपरायणता और स्वधर्म पालन के लिए प्रेरित करती रहती है। भारत का कोई भी भू-भाग उपरोक्त कसौटी पर खरा उतरता है तो उस भूभाग को चित्तौड़ की उपमा देना तर्क संगत होगा।

जम्मू कश्मीर राज्य के जम्मू क्षेत्र में बाड़ी ब्राह्मणा और साम्बा के मध्य, विजयपुर रेल्वे स्टेशन से मात्र चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित गाँव गुढा सलाथिया भी जम्मू का चित्तौड़गढ़ कहलाता है। इस गाँव की अपनी अलग ही पहचान है। यह गाँव कर्नलों-जनरलों का गाँव भी कहलाता है। पाकिस्तान की सीमा से सटा हुआ गाँव, जहाँ के निवासी सैन्य सेवा को प्राथमिकता देते हैं। सन् 2006 में इस गाँव के दस में से नौ पुरुष सुरक्षा सेनाओं में सेवारत थे। इनमें 14 कर्नल और तीन जनरल के पद पर थे। यह गाँव राजपूतों का अधिसूचित गाँव है। इसमें सलाथिया खांप जो जामवालों की ही शाखा है के राजपूतों का बाहुल्य है। यही वजह है कि इसका नाम गुढा सलाथिया पड़ा।

राष्ट्र की स्वतंत्रता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अभी तक लड़े गये सभी युद्धों और सैनिक अभियानों में, यहाँ के निवासियों ने अपूर्व योगदान और बलिदान दिया है।

सैन्य सेवा को प्राथमिकता देने वाले गाँवों की सूची में अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के कारण प्रथम स्थान का कीर्तिमान स्थापित कर 2007 में लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस में अपना नाम दर्ज कराने का गौरव इस गाँव को प्राप्त हो चुका है।

इस गाँव के अधिकारियों द्वारा स्थापित कीर्तिमान भी विश्व में अपने किस्म की पहली अद्‌भुत घटना है। गुढा सलाथिया के मेजर महातम सिंह के तीन पुत्र और तीनों ने सेना में कमीशन प्राप्त कर जनरल का रैंक हासिल किया और कुछ समय के लिए एक साथ तीनों जनरल के पद पर सेवारत रहे। यह दुनिया के इतिहास का पहला संयोग है। तीनों भाईयों में ज्येष्ठ ले. जनरल अनूप सिंह जामवाल को दिसम्बर 1966 में, ले. जनरल कुलदीप सिंह को 1967 में और मे. जनरल राजेन्द्र सिंह को 1973 में कमीशन मिला।

ये तीनों भाई सन् 2006 में 20 फरवरी से 31 अगस्त के दौरान जनरल के पद पर सेवारत रहे और उन्होंने 2007 में प्रकाशित हुई पुस्तक लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया। कमाल की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। इन भाईयों के एक बहन जिसका विवाह एक सैनिक अधिकारी से हुआ, वे भी मेजर जनरल के पद पर पहुंचे। उनका नाम मेजर जनरल सत्यपाल सिंह कंवर जो गढ़वाल राइफल्स और लद्दाख स्काउट्स के कर्नल कमाडाण्ट रह चुके है।

जम्मिकुण्टा:राष्ट्रगान तेलंगाना की निराली परम्परा

राष्ट्रगान हमारे लिए आन बान और शान का मानक है फिर भी कुछ सिरफिरे लोग धर्म निरपेक्षता की आड में और कई बुद्धिजीवी इसे अभिव्यक्ति की आजादी को खतरा मान कर इसका विरोध ही नहीं करते अपितु इसका अपमान करने से भी नहीं चूकते।

ऐसे भी बहुत लोग हैं। जो राष्ट्रगान को सम्मान केवल कानून के डर से देते हैं अंतर्आत्मा से नहीं।

इसी प्रकार के भूले भटके और भ्रमित लोगों के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है, तेलंगाना राज्य के जिला करीमनगर का एक छोटा सा गांव जिसका नाम है जम्मिकुण्टा। इस गाँव के सभी लोग हर रोज सुबह

ठीक आठ बजे, अपने सभी काम छोड़, सावधान मुद्रा में खड़े होकर राष्ट्रगान गाकर अपने राष्ट्र प्रेम की भावना का प्रदर्शन करते हैं और पूरे देश को प्रेरणा प्रदान करते हैं।

इस सराहनीय प्रयोग का भाव जम्मिकुण्टा के एक पुलिस अधिकारी के हृदय में जागृत हुआ। उन्होंने गाँव के लोगों के साथ विचार विमर्श कर एक आम राय कायम की। सभी की सहमति मिलने पर 15 अगस्त, 2017 को इस अनूठे प्रयोग का श्री गणेश हुआ। तब से यह परम्परा अनवरत जारी है। जब पहली बार राष्ट्रगान का प्रसारण हुआ तो लोगों को कुछ समझ में नहीं आया। बहुत से लोग तो अपने काम में लगे रहे, जो लोग खड़े भी हुए वो सावधान की मुद्रा में नहीं थे। लेकिन धीरे-धीरे अब लोगों को राष्ट्रगान के नियमों की भी पूरी जानकारी हो गई है।

गाँव में राष्ट्रगान के प्रसारण के लिए 16 लाउडस्पीकर्स लगाये गये हैं ताकि सभी सुन सकें। हर रोज राष्ट्रगान शुरू करने की जिम्मेदारी कान्सटेबल मोहम्मद पाशा को दी गई है। वह सुबह 7:30 बजे पुलिस स्टेशन से पहले आधे घण्टे तक देश भक्ति के गीत बजाते हैं इसके बाद राष्ट्रगान होता है। राष्ट्रगान शुरू होने पर सभी ग्रामवासी राष्ट्रगान के सम्मान में अपना काम छोड सावधान मुद्रा में खड़े होकर राष्ट्रगान को गुनगुनाते हैं।

बात यहीं समाप्त नहीं हुई। जम्मिकुण्टा के पड़ौसी गाँव कोलनूर जो तहसील ओडेला जिला करीमनगर के तहत आता है वहाँ के सरपंच अब्दुल रसीद ने भी यह परम्परा अपने गाँव में शुरू कर दी है।

राष्ट्र के प्रति सच्ची श्रद्धा और सम्मान प्रदर्शित करना सभी देशवासियों का नैतिक कर्तव्य है। बिना इसके हम अपने देश पर गर्व नहीं कर सकते। और बिना गर्व किये स्वामित्व की भावना जागृत नहीं होती जो विकास और समृद्धि के लिए आवश्यक है।

इस पावन परम्परा का प्रसारण अनेक टी.वी. चैनल पर होता रहता है। इसी से प्रेरणा लेकर हरियाणा राज्य के जिला फरीदाबाद में स्थित भनकपुर गाँव के लोगों ने भी यह प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। इस गाँव की पंचायत ने आठ लाख रूपये का निवेश कर 22 सी.सी.टी.वी. कैमरे और 20 लाउड स्पीकर्स लगवाये हैं।

कोकरेबेल्लूर (कर्नाटक)
प्रवासी पक्षियों का मायका

कोकरेबेल्लूर एक छोटा-सा गाँव है जो बैंगलोर मैसूर मुख्यमार्ग पर बैंगलोर से 90 कि.मी. की दूरी पर मद्दूर के पास स्थित है। यह गाँव यहाँ पाये जाने वाले दुर्लभ पक्षी स्पॉट बिल्ड पेलिकन्स और पेटेन्ट स्टॉर्क के लिए प्रसिद्ध है। पेटेन्ट स्टॉर्क्स को स्थानीय भाषा मे कोकरे कहते हैं और बेल्लूर का अर्थ है गुड़वाला गाँव। क्यों कि इस गाँव में ये दोनों ही पक्षी बहुतायत में पाये जाते हैं इसलिए इस गाँव का नाम पड़ा कोकरेबेल्लूर।

यह गाँव शिमशा नदी के किनारे बसा हुआ है, जहाँ अनेक ताल तलैया, चावल के हरे-भरे खेत, विचरण करते हुए पशु और बेशुमार दुर्लभ पक्षियों के झुण्ड एक बहुत ही मन मोहक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। ताल तलैया में इन दुर्लभ पक्षियों की अठखेलियाँ देख आगंतुक का हृदय भाव विभोर हुए बिना नहीं रह सकता।

कोकरेबेल्लूर कोई सुरक्षित पक्षी अभयारण्य तो नहीं है परन्तु यहाँ इतने दुर्लभ पक्षी नजर आते हैं जितने उत्तर भारत में कौवे और कबूतर नजर आते हैं। यहाँ स्पॉट बिल्ड पेलिकन्स और पेटेन्ट स्टॉक के अलावा लिटल कामोरेंट ब्लैक आइबिस, ग्रेहेरॉन, ब्लैक क्राउण्ड, नाईट हेरॉन, इण्डियन पॉण्ड हेरॉन और रोज रिंग्ड पैराकीट्स भी बड़ी संख्या में पाये जाते हैं।

स्पॉट बिल्ड पेलिकन्स 'संकट ग्रस्त' पक्षी की श्रेणी में आते हैं इसलिए सरकार इनके प्राकृतिक आवास, जो इस क्षेत्र में उपलब्ध है, उनको सुरक्षित रखने के लिए गम्भीर है। इनकी सुरक्षा के लिए गाँव वालों को अनुदान/प्रोत्साहन राशि का भुगतान करती रहती है।

यहाँ उपलब्ध फाइकस और इमली के पेड़ों पर ये पक्षी अपने घौंसले बनाते हैं। गाँव के आस पास की ताल

तलैया और खेतों में इनके लिए भोजन सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। पेड़ों के नीचे इन पक्षियों का अपशिष्ट काफी मात्रा में इकट्ठा हो जाता है जिसको ग्रामीण खाद के रूप में उपयोग करते हैं। ये पक्षी 15-20 के जोड़ों में एक पेड़ पर घोंसले बनाते हैं।

मानसून के उपरान्त सितम्बर के महीने में इन प्रवासी पक्षियों का आना प्रारम्भ हो जाता है। यहाँ आने पर ये अण्डे देते हैं, इनको हैच करते हैं, और बच्चे जब उड़ने लग जाते हैं तो मई के महीने में ये फिर से परदेशों में जाना प्रारम्भ कर देते है।

इस गाँव के निवासी इन पक्षियों को अपने परिवार के सदस्य की तरह प्यार करते हैं। सदियों से पक्षियों के ये झुण्ड यहाँ आ रहे हैं। ग्रामीण इनके आगमन को शुभ मानते हैं और इनके स्वागत में पलक-पावड़े बिछाते है। भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े हैं। इन पक्षियों का यहाँ आना और बच्चों का पालन-पोषण करना गाँव वालों को अपनी पुत्री के प्रसव का आभास कराते हैं। यहाँ के निवासियों ने यह उदाहरण प्रस्तुत किया है कि मानव जाति और पक्षी एक साथ एक-दूसरे को नुकसान पहुंचाए बिना भी अपना अस्तित्व बनाए रख सकते हैं। ये पक्षी गाँव वालों के बीच अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं। और लोग उन्हें निकट से देख सकते हैं। यहाँ घायल पक्षियों के उपचार के लिए भी विशेष व्यवस्था की गई है।

इन पक्षियों के कारण गाँव वालों को अनेक आर्थिक लाभ भी मिलते हैं। पक्षियों के घोंसलों के लिए पेड़ों को सुरक्षित रखना पड़ता है। इस नुकसान की भरपाई सरकार करती है। इन पेड़ों के नीचे खेती की जा सकती है। पेड़ों के नीचे पक्षियों का जो अपशिष्ट इकट्ठा हो जाता है वह बहुत उपजाऊ खाद के रूप में गाँव वालों को मिल जाता है। प्रवासी पक्षियों को देखने के लिए बडी तादाद में पर्यटक यहां आते हैं जिनसे गाँव वालों को काफी आमदनी होती है।

इन पक्षियों की चहचहाट, मनमोहक उडान, पानी में तैरना और अठखेलियाँ करना एक ऐसे सुखद वातावरण का निर्माण करती है जो अनमोल है। यह गाँव हमें पशु पक्षियों के प्रति क्रूरता को छोड़ करुणा दिखाने के लिए प्रेरित करता है।

केड़िया (बिहार) जैविक खेती का चैम्पियन

आजकल देशभर से किसानों द्वारा आत्महत्या किए जाने की खबरें आ रही हैं। किसानों की समस्या देश के लिए गम्भीर चिंता बनी हुई है। किसानों की इस दयनीय और निराशा जनक स्थिति के अनेक कारण हैं जिनमें कृत्रिम उर्वरक यानी रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयों का बढता उपयोग भी एक बडा कारण है।

भारत में जब खाद्यान्न की स्थिति बेहद कमजोर हो गई थी और हम आयात पर निर्भर हो गये थे, तब 1973-74 के दौरान देश में खाद्यान्न की पैदावार बढाने की कोशिशें शुरू हुई। चुनौती बड़ी थी अतः नई तकनीक और उन्नत बीजों का सहारा लेने के लिए विवश होना पड़ा। रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयों के उपयोग से पैदावार बढाने पर जोर दिया गया। परन्तु इसके दूरगामी हानिकारक परिणामों के बारे में तब किसी ने सोचा तक नहीं। शुरुआत में तो इसके इस्तेमाल को लेकर काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। किसान इन उर्वरकों का इस्तेमाल करने के लिए भी तैयार नहीं होते थे। जब धीरे-धीरे उन्हें इसके परिणाम दिखाई देने लगे तो उन्होंने इसे अधिकता से उपयोग करना शुरू कर दिया। लम्बे अर्से से इसके अधिक उपयोग से नकारात्मक परिणाम सामने आने लगे, तब तक स्थिति ने भयानक रूप धारण कर लिया। रासायनिक खाद के निरन्तर इस्तेमाल से :-

1. कृषि भूमि की उपजाऊ क्षमता कम हो गई।
2. भूमि बंजर होने लगी ।
3. रासायनिक खाद के दुष्प्रभाव से उपयोगी जीव-जंतु लुप्त हो गये।
4. सिंचाई के लिए अधिक पानी की जरूरत ।
5. फसलों की गर्मी सहने की क्षमता घटने से ये जल्द पीली पड़ने लगती है।

6. किसानों पर खेती की लागत का बोझ बढ गया।
7. खेती बारिश के भरोसे टिके होने के कारण हमेशा घाटे की आशंका बनी रहती है।
8. कम ऊपज और अधिक खर्च से कर्ज बढ़ने लगा।
9. पैदा नहीं होने से महाजन का सूद भरना भी कठिन होने लगा।

उर्वरक के साथ ही कीटनाशक दवाईयों के इस्तेमाल से भूमि का ही नहीं अपितु किसान का स्वास्थ्य भी बिगडने लगा।

उपरोक्त सभी कुप्रभावों से निजात पाने के लिए जमुई-बिहार के केडिया गाँव के किसानों ने एक नई पहल शुरू की जैविक खेती की। इस गाँव के किसान 8 वर्ष पूर्व देश के अन्य किसानों की तरह खेती करते थे। लेकिन जब उन्हें रासायनिक खाद के दुष्प्रभाव के बारे में पता चला तो वे इसे छोड़ जैविक खेती करने लगे। सबसे पहले गाँव के अनछ यादव ने, जिसकी उम्र तब 70 वर्ष की थी, जैविक खेती के महत्त्व को समझा और उसे अपनाया भी, उसके बाद गाँव के अन्य किसानों ने भी जैविक खेती को अपना लिया।

अनछ यादव ने अमृतपानी बनाना सीखा और सबसे पहले उसका इस्तेमाल मिर्च की खेती में किया। इसका फायदा इतना जबरदस्त मिला कि लोग हैरान हो गये और दूसरी फसलों में भी इसका इस्तेमाल करने लगे। जैविक खेती के लिए किसान गोबर, सब्जियों के छिलके, गौ मूत्र और मानव मल मूत्र का भी इस्तेमाल करते हैं। मानव मल मूत्र को खाद में बदलने के लिए इकोलॉजिकल सैनीटेशन (ईको-सैन) शौचालयों का निर्माण करवाया गया है।

जैविक खेती के लिए किसानों ने ग्रीनपीस नाम की संस्था की मदद से बॉयोगैस प्लांट लगवाये जिससे किसानों को खाना पकाने के लिए गैस उपलब्ध कराई जा रही है।

इस मॉडल से गाँव की महिलाओं को बहुत सुविधा मिल रही है। इको-सैन शौचालय के बनने से महिलाओं को खुले में शौच के लिए नहीं जाना पड़ता वहीं दूसरी तरफ खाना बनाने के लिए बॉयोगैस मिल जाती है।

गाँव में 282 वर्मी कम्पोस्ट बैड लगाये जा चुके हैं। रासायनिक खाद के इस्तेमाल में भारी कमी हुई है जिससे किसानों की खेती में लागत घटी है। सबसे खास बात यह है कि अभी तक कुदरती खेती में किसी भी तरह का नुकसान नहीं पाया गया है।

यह मॉडल पूर्ण रूप से गाँव वालों की सहायता से विकसित हुआ है। गाँव के किसानों का संगठन 'जीवित माटी किसान समिति' सरकार की उन प्रगतिशील योजनाओं का लाभ लेने में सफल रही है जो जैविक खेती और इको कृषि को प्रोत्सहित करने के लिए बनाई गई है। गाँव के वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए व पक्षियों की चहचाहट सुनने के लिए गाँव में 2000 पेड़ लगाने का लक्ष्य भी बना रखा है।

लेकिन केडिया गाँव की मुश्किलें भी देश के दूसरे किसानों से कम नहीं थी। इनके पास भी कृषि उत्पादन के भण्डारण की उचित व्यवस्था नहीं थी। ग्रीन पीस क्राउडफंडिंग की मदद से गाँव में सोलर से चलने वाला कोल्ड स्टोरेज उपलब्ध कराया गया है। कोल्ड स्टोर में किसान अपनी पैदावार का भण्डारण कर सकते हैं और अपने उत्पादों को अपनी शर्तों पर बेच सकते है। साथ ही किसान अपने बीजों को संरक्षित रख सकते हैं।

सोलर पावर से संचालित यह कोल्ड स्टोरेज केडिया के किसानों द्वारा पर्यावरणीय इकोलॉजिकल कृषि और जीवन पद्धति को अपनाने की कोशिश को और मजबूत बनायेगा। ग्रीन पीस ने क्राउडफंडिग का ऑनलाइन अभियान शुरू किया है। इस मुहिम को वहीदा रहमान, पूजा बेदी, पंकज त्रिपाठी जैसी बॉलीवुड की प्रसिद्ध हस्तियों का सहयोग मिला है। इन हस्तियों ने एक वीडियो अपील जारी कर केडिया के किसानों के लिए चंदा जमा कराने कि पहल की है। बिहार प्रान्त का यह गाँव पूरे देश के लिए एक अनुपम उदाहरण है। जैविक खेती की वजह से यहाँ के किसानों की स्थिति में सुधार आया है और साथ ही गाँव की महिलाओं का विकास हुआ है। पर्यावरण तो साफ हो ही रहा है साथ ही यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ बन चुकी है। **(क्रमशः)**

अपनी बात

मनुष्य में तृप्ति की खोज बनी ही रहती है। जब तक वह मिल न जाए तब तक आँखें खोजती ही रहती हैं। वह ऊपर-ऊपर से अपने आपको समझाने का भले ही प्रयास करे पर देर-सबेर वे प्रयास टूट जाएंगे और विषाद ही हाथ लगता है। अपनी गहरी जिज्ञासा को तृप्त करने में ही मानव ने संसार का सारा फैलाव कर लिया है। पता नहीं चलता किसकी खोज है। कभी धन खोजने चलता है तो कभी पद खोजने चल रहा है। एक दिन धन भी पा लेता है बहुत प्रयास कर, लेकिन महसूस करता है कुछ हाथ न लगा। पद भी मिल जाता है जीवन को दांव पर लगाकर लेकिन मिलने पर लगता है कुछ नहीं मिला, जीवन व्यर्थ ही गया।

जो धन खोजने वाला है, वह खोजने तो जा ही रहा है। जो पद खोजने वाला है, वह भी खोजने जा रहा है। ऐसा आदमी ही मिलना मुश्किल है जो कुछ खोज न रहा हो। क्योंकि मनुष्य स्वयं एक खोज ही है, एक जिज्ञासा ही है। जब तक इस जिज्ञासा का तीर परमात्मा की तरफ नहीं लग जाता है, तब तक हमारा यह भटकाव जारी ही रहता है, ऐसा संत महात्माओं का कहना है।

कुछ पता भी नहीं है कि, मंजिल क्या है, कहाँ जाना है, कहाँ से आए हैं, किसलिए आए हैं, किसलिए जाना है? न मंजिल का होश है और न अपनी खबर है। न यह पता है कि खोजने वाला कौन है, वह कौन मेरे भीतर बेताब है, कौन बेचैन है जो दौड़ाए जा रहा है। कौन है जिसकी जिज्ञासा मिटती ही नहीं है। धन दो, पद दो, प्रतिष्ठा दो, यश दो, सब दे दो पर भीतर कौनसा पात्र है जो भरता ही नहीं है, खाली का खाली ही रहता है। इसलिए फिर खोज शुरू हो जाती है।

एक वासना चुकती ही नहीं कि दूसरी वासना शुरू हो जाती है। क्योंकि खोज तब तक जारी रहेगी जब तक कि जो ठीक है उसको न खोज लिया जाए। उस ठीक का नाम परमात्मा है, यह साधुजन समझाते हैं। मनुष्य में ठीक प्रश्न बन जाने, ठीक जिज्ञासा समझ में आने का नाम ही धर्म है। ठीक प्रश्न तो एक ही होता है, गलत प्रश्न हजार हो सकते हैं। हमारे भीतर ठीक प्रश्न निर्मित नहीं हुआ तो ठीक जिज्ञासा नहीं बनी। और तब बार-बार तलाशना, पूछना चलता ही रहेगा। यह आदमी का भाव है। यह आदमी की नियति है। ईश्वर को इन्कार कर दो फिर भी खोज जारी रहती है, कुछ तो खोजोगे। खोज से बचने का कोई उपाय नहीं।

गलत खोज हजार हो सकती है पर ठीक खोज होगी तो एक ही होगी। स्वास्थ्य तो एक ही होता है, बीमारियाँ तो अनेक होती हैं। स्वास्थ्य में कोई भेद नहीं होता, बीमारियों में भेद होता है। कोई कहे कि मैं बीमार हूँ, तो पूछा जाता है कौनसी बीमारी है? लेकिन कोई हमसे कहे कि मैं स्वस्थ हूँ तो क्या यह पूछा जाता है कि कौनसा स्वास्थ्य है? यह प्रश्न ही व्यर्थ है। स्वास्थ्य तो बस स्वास्थ्य है।

जब सत्य बोला जाए तो जो समझते हैं वे आनन्दित होंगे। जो नहीं समझते हैं, वे हंसेंगे। जो नहीं समझते हैं अगर वे न हंसे तो समझना चाहिए कि सत्य बोला ही नहीं गया। उनका हंसना जरूरी है क्योंकि उन्होंने झूंठों को सत्य मान लिया है। उनको तो सत्य झूठा मालूम होता होगा। व्यक्ति ने अपने अन्दर जिसको सत्य की तरह पकड़ लिया है, उसी से तो वह कही गई बात को तोलेगा, उसके वही तो तराजू होगा। किसी ने धन को सत्य समझा है और एक अन्य व्यक्ति ध्यान में मग्न हो रहा है। तो धन के तराजू वाला व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को पागल ही समझेगा। क्योंकि उसके पास तराजू अलग ही है, लेकिन अगर दूसरा व्यक्ति धन की दौड़ में हो तो वह समझदार है, ऐसा ही तराजू बताएगा। जो पद की आकांक्षा से पीड़ित है, जिसके भीतर बस एक ही प्रार्थना है और एक ही पूजा है, एक ही अर्चना है – दिल्ली चलो। अगर वह व्यक्ति ध्यान लगाते किसी को देखेगा तो समझेगा यह व्यक्ति पागल हो गया है। कहेगा- 'सारी दुनिया दिल्ली जा रही है, तुम कहाँ जा रहे

हो? होश में हो?' यदि व्यक्ति पद पर है और छोड़कर अलग होना चाहता है तो पद के तराजू वाला कहेगा- 'तुम्हारा मस्तिष्क खराब हो गया है। सारी दुनिया आ रही है राज्यसिंहासन की तरफ और तुम कहाँ जा रहे हो?' उसके पास एक ही तर्क है, एक ही भाषा है। पद ही उसके मापने का मानदंड है।

अपनी आकांक्षा को ठीक-ठीक परख लेना है, पहचान लेना है। फिर अपनी आकांक्षा को ठीक-ठीक दिशा देनी है। यही धर्म का काम है। भीतर अन्य कोई प्रश्न नहीं रहता, इसके लिए ध्यान की प्रक्रिया है। ध्यान से अन्य सारे प्रश्नों दो विदा किया जा सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की पूरी प्रशिक्षण प्रणाली अन्य प्रश्नों को विदा करने की प्रक्रिया ही है। धीरे-धीरे प्रश्न गौण होते जाते हैं। तब महसूस होता है कि यह दिल की कली खिली तो नहीं अब तक, लेकिन एक सुबह प्रातःकालीन हवा आएगी और मेरी कली को खिलाएगी। फूल बनाएगी। सूरज निकलेगा और उसकी रोशनी में मेरी गंध भी लुटेगी और मैं तृप्त होऊँगा। यह आकांक्षा गहरे में बैठी है। ●

पृष्ठ 19 का शेष

शूर भक्त सुधन्वा

अर्जुन के मुख से एक शब्द नहीं निकला। सुधन्वा का शव यहाँ पड़ा रहे और वे आतिथ्य स्वीकार करने नगर में जाएँ, यह कैसे उचित हो सकता था। महाराज हंसध्वज ने तो पुत्र के शरीर की ओर देखा भी नहीं।

महाराज हम सब आपका आतिथ्य स्वीकार करने को उत्सुक हैं, श्रीकृष्ण ने कहा-किन्तु यह मेरे अत्यन्त प्रियजन का मस्तक है। मैं अनुरोध करता हूँ कि आप पहले इसकी उत्तर क्रिया करने में मेरी सहायता करें।

भक्त-वत्सल! इनके चार भाई हैं, हसंध्वज ने कहा- वे इसकी उत्तर किया कर देंगे। आप संकोच का त्याग करके इस मस्तक को विसर्जित करें और राज सदन पधारें।

इसे मैं अपने हाथों अग्नि देव को अर्पित किये बिना दूसरा कुछ कर नहीं सकूँगा महाराज! श्रीकृष्ण का स्वर भरा हुआ था-यह मेरा भी भाई ही है। इसकी उत्तर-क्रिया की आप मुझे दया करके अनुमति दें। ●

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि.	5.6.2024 से 8.6.2024	**नाथद्वारा** - महाराणा प्रताप छात्रावास लाल बाग, नाथद्वारा
02.	प्रा.प्र.शि.	6.6.2024 से 9.6.2024	इटावा भोपजी - सूर्यम एकेडेमी, इटावा भोपजी तह. चौमू, (जयपुर)
सम्पर्क सूत्र : गिरधरसिंह इटावा - 9784999683, सुरेन्द्रसिंह नाथावत - 9829650011, हनुवन्तसिंह - 9887061971			
03.	प्रा.प्र.शि.	8.6.2024 से 11.6.2024	केटेश्वर महादेव **लूणदा** कारोड़ (उदयपुर)
04.	प्रा.प्र.शि.	11.6.2024 से 14.6.2024	**नीनोर** (प्रतापगढ़)

दीपसिंह बेण्याकाबास

शिविर कार्यालय प्रमुख (श्री क्षत्रिय युवक संघ)

Manufacturer of Mattresses : Sofa Set & Furniture

Vision Comfort Line+ Mattress

स्प्रिंग मैट्रेस

HARSH CORPORATIONS

68 Giriraj Nagar, Govindpura, Kalwar Road, Jaipur +91 97173 59655

MADHAVGARH
HOTEL AND RESORT
For The Love Of Delicious Food

MADHAVGARH HOTEL AND RESORT

Marriage Garden | AC/Non Room | Party Hall | Restaurant

Opp. Ramjan Hatha, Near SBI Bank, Banar Road, Jodhpur-342015
Mobile : 8233660948, 9829179525

जून सन् 2024
वर्ष : 61, अंक : 06

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या – Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह